Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ईरान का सांस्कृतिक इतिहास, सीरीज़ नं० ५२

ईरान की धार्मिक उन्नति

(ज़रतुश्ती धर्म की कल्चर)

सं० ४६

31-12-61.

लेखक

डा० एस० बी० समदी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitized by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ईरान की धार्मिक उन्नति

लेखक
डा० एस० बी० समदी
एम. ए., पी एच. डी.
लेक्चरार, लखनऊ यूनिवर्सिटी

हुमता
हुखता
हुवरश्ता

प्रथम संस्करण सन् १९५२ मूल्य ॥।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

PUBLISHED BY
Din Dayal Srivastava
25 MARWARI GALI
LUCKNOW

Dedicated
to the Sacred memory
of my father & mother.

PRINTED BY
Vedant Printing Press,
25, Marwari Gali,
LUCKNOW.

(*All Rights Reserved*)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

FOREWORD

I have looked into the book which Dr. S. B. Samadi has taken pains to write on the interesting subject of the "Development of Religion in Iran". This is a book intended to supplement his first book dealing with the "Cultural Development of Iran".

I hope the study of the Development of Religion in Iran will help us to appreciate the Cultural History of Iran and its contribution to the Culture of Asiatic Countries and the foreign influences which have moulded it. To understand modern Iran in its proper perspective it is necessary to have some knowledge of its Cultural and Religious History and of the forces that have gone to make it a Nation struggling to maintain its independence.

Lucknow University
16th Oct. '52.

JUGAL KISHORE
Vice-Chancellor

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भूमिका

मैंने जब सन् १९५१ ई० में 'ईरान का सांस्कृतिक इतिहास' को छपवाना शुरू किया तो ख्याल था कि इसी में धार्मिक उन्नति के बारे में भी सब कुछ आ जायगा ; परन्तु जब किताब उस हद तक छप चुकी जैसी कि वह अब है तो फिर और उसको बढ़ाना उस वक़्त असम्भव हुआ और मैंने जो कुछ भी धार्मिक उन्नति पर लिखा था वह मैनुस्क्रिप्ट यों ही पड़ा रह जाता अगर इसमें कुछ लोग मेरी मदद न करते—सबसे पहले उसे साफ़ करना एक बड़ा काम था, जिसे मेरी पुत्री दुरदाना समदी ने बड़े प्रेम से किया। उसके बाद उसके छपवाने के काम में श्री एस० एस० सिनहा ने बहुत मेहनत और दौड़-धूप की और उनकी कोशिश का यह फल है कि श्री दीन दयालजी ने इस पुस्तक को अपने तौर पर छापना स्वीकार किया और मुझे ख़ुशी है कि ईरानी कल्चर और मज़हब जैसे विषय के बारे में लोगों की दिल-चस्पी बढ़ती जा रही है, जिसका एक बड़ा सुबूत हर साल विश्व-विद्यालय और उससे सम्बन्धित विद्यालयों में विशेषकर महिला विद्यालय में ऐसे विद्यार्थियों की बढ़ती हुई संख्या है जो 'ऐशियन कल्चर' के विषय को लेना पसन्द करते हैं।

इस छोटी पुस्तक में कई परिशिष्टियाँ भी हैं जिनमें से दो धार्मिक उन्नति से भिन्न विषय पर हैं। इसका कारण यह हुआ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कि जब मैं इस किताब को लिख रहा था उस वक़्त मुझे एक नई किताब, Robert William Rogers : History of Ancient Persia, मिल गई और उसमें कुछ ऐसी अच्छी और सुन्दर बातें प्राचीन ईरान के बारे में दी हुई थीं कि मैंने सोचा कि अगर यह भी किसी तरह इस छोटी पुस्तक में आ जायँ तो इनका होना सभी के लिये लाभदायक होगा। मुझे उम्मीद है कि विद्यार्थी और दूसरे लोग इससे पूरा फ़ायदा उठाएँगे। आख़िर में मुझे अपने कुछ दोस्तों और विद्यार्थियों को धन्यवाद देना है, जिनमें सबसे पहला नाम श्री एस० एस० सिनहा का है जिनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है। इसके बाद श्री गोपालशरण का नाम आता है जिन्होंने क़ीमती वक़्त देकर इस किताब का लेख तैयार करने में मेरा हाथ बँटाया। अन्त में मुझे वेदान्त प्रेस को इस पुस्तक के छापने पर मुबारकबाद देना है।

इस किताब पर आचार्य जुगलकिशोर जी ने 'दो शब्द' लिखकर मुझ पर बड़ा एहसान किया है और मैं उनका बहुत ममनून हूँ।

लखनऊ यूनिवर्सिटी
२० अक्तूबर १९५२

एस० बी० सप्रदी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विषय-सूची

१	हुख़मन्शियों के ज़माने में ईरान का मज़हब	१
२	हिन्दुस्तान के पारसी	७
३	ज़रतुश्त (Zoroaster)	६
४	मानी मज़हब (Manichaeism)	१६
५	मज़दक का मजहब	२४
६	बेहआफ़रीद (Behafrid)	२६
७	ईरान में दूसरे बाहरी मज़हब	२८
६	सासानियों के ज़माने में साल के त्योहार और दावतें	२६
१०	आजकल का मजदी या ज़रतुश्ती मजहब	३२
११	रस्म-ओ रिवाज	३३
	परिशिष्टि (Appendices)—	३५
१२	परिशिष्ट (Appendix) १–ईरान की भूमि और निवासी	३६
	परिशिष्ट (Appendix) २–ईरान की जबान	३६
	परिशिष्ट (Appendix) ३–ईरान का मज़हब	४१

———

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ईरान की धार्मिक उन्नति

हुख़मन्शियों के ज़माने में ईरान का मज़हब

सरूस की बनाई हुई बड़ी सलतनत के अन्दर जिसे दाराएआज़म ने फिर से क़ायम किया था और उस में एका फैलाया था हर तरह की मज़हबी आज़ादी रिआया को थी। यह हुख़मन्शी बड़े बादशाह हर बात को ले लेना और अपनाना जानते थे और किसी एक ही बात के पीछे नहीं पड़े रहते थे और न दूसरों को अपने अक़ीदे (मत) का बनाने की कोशिश करते थे बल्कि वह नये नये मज़हबों और बाहर की मूर्तियों और देवताओं की पूजा की तरफ़ बढ़ते थे और उनको अपना मदद देने वाला मानते थे। इन सम्राटों के अपने ख़्यालात क्या होंगे जिनके अन्दर ऐसे लोगों के देवताओं को मानने की भी ख़्वाहिश थी जिन्हें उन्होंने लड़ाई में जीता था इस बारे में हमारे पास बहुत कम जानकारी है और इस विषय पर हम सिर्फ़ मोटी मोटी बातें बता सकते हैं। यह बात यक़ीनी है कि मीडी-ईरानी (Me-do-Persian) लोगों में तीन तरह का मज़हब पाया जाता था। एक बादशाहों का होता था। उसका सुबूत कतबों से मिलता है। दूसरा आम लोगों का मज़हब था जिसके बारे में हम बहुत थोड़ा जानते हैं। और तीसरे माजियों का मजहब था जिसके बारे में इसके सिवा और कोई

Digitization by American Academy of India Studies. AAIS(USA)

सुबूत नहीं कि अविस्था की गीत माला में कुछ गीत पाये जाते हैं। इन मज़हबों में सब से बड़ा दर्जा अहोरामाज़दा का है जो तमाम कायनात (Universe) का ख़ुदा है और सब देवताओं से बड़ा है। जिस ने ज़मीन और आसमान सब पैदा किये। बादशाह अहोरा-माज़दा के फ़ज़्ल (Grace) से बादशाह होता है। उसी से उसको ताक़त मिलती है और वह अपने बाग़ियों को हराता है। जैसा कि बेहिसतून के कतबों में दारा ने लिखवाया है। अगर अहोरामाज़दा का दर्जा सब देवताओं या ख़ुदाओं में बड़ा है तो इस के माने यह होते हैं कि कुछ और भी ख़ुदा हैं। शायद उन को बादशाह का एतबार हासिल [प्राप्त] नहीं था यानी वह उनको नहीं मानता था क्योंकि बादशाह जिस ख़ुदा को मानता था उसका जिस्म नज़र नहीं आता था। इस लिए उसकी एक अलामत मुक़र्रर करके उसकी पूजा की जाती थी। दारा की क़ब्र पर जो सीन बना हुआ है उससे इस बात का पता चलता है। बादशाह एक पत्थर की क़ुर्बान-गाह पर आग की पूजा कर रहा है, ऊपर से सूरज चमक रहा है। यह सीन खुले में बना हुआ है क्योंकि पुराने इ रानियों के यहाँ कोई मन्दिर नहीं होते थे। इस पूरे सीन पर जिस चीज़ का सबसे ज़्यादा असर पड़ रहा है वह अहोरा-माज़दा की शक्ल है। बहुत दिनों के बाद पवित्र आग को सूरज की किरणों से बचाना शुरू किया गया। दूसरे बादशाहों के कतबों में हमको मिथरा (Mithra) और अनाहिता (Anahita) के नाम सब से पहले मिलते हैं। मिथरा सूरज देवता का एक रूप है और इसका एक खुफ़िया (Esoteric) मज़हब निकला जिस के मानने वाले तमाम रोमन साम्राज्य (Empire) में फैल गये। अनाहिता आसूरिया (Assyria) का देवता था और शायद ज़ोहरा देवी (Venus) का सितारा। बादशाह का मज़हब कुछ का कुछ हो गया। अहोरा-माज़दा का ख़्याल कि वह आसमान पर है,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुराना पड़ गया और बहुत से देवी देवता माने जाने लगे। ईरानियों के यहाँ मिथरा की पूजा बहुत पुराने समय से होती थी। मगर बादशाहों के यहाँ इसकी क़द्र पांचवी सदी ईसवी से शुरू हुई। चौदहवीं सदी बी० सी० में वरुण (Varuna), इन्द्रा और नसतियास(Nasatyas) के नामों के साथ इस का नाम आया है। नसतियास उत्तरी मेसोपटामिया का एक देवता है। अवित्ता से पहले के ज़माने में मिथरा ऊपरी दुनिया की रोशनी और निचली दुनिया के अंधेरे के बीच फ़ैसला देता और हुक्म सुनाता था। आरटाज़रज़ेक्स (अर्दशीर) दोयम (४०५-३५८ B-C,) के बाद दूसरे बादशाहों ने इसकी इस कारण इज़्ज़त की क्योंकि इसकी वजह से यह समझा जाता था कि बादशाह की शानोशौकत बढ़ती है। ईरानी अपनी क़सम (Oath यानी शपथ) में उसे शामिल कर लेते थे ताकि वह ग्वाह रहे और लड़ाई के मौक़े पर उस से मदद मांगते थे। अनाहिता का शुमार ईरान के देवताओं में होना इस बात का सुबूत है कि बादशाह के मज़हब में कलदानी ज्योतिष (Chaldean Astronomy) दाख़िल हो रही थी। ईरान की सलतनत के ख़त्म होने के बाद इस देवता की इज़्ज़त एशियामाइनर की बहुत सी बादशाहतों में की जाती थी। ईरान के लोग चार अनासिरों (Elements) की पूजा करते थे रोशनी जो दिन की यानी सूरज की और रात की यानी चाँद की अलग अलग समझी जाती थी। फिर पानी, ज़मीन व हवा यह तीनों अनासिर और थे। क़ुर्बानी जानवरों की करना और वह भी माजी के सामने ज़रूरी था। क़ुर्बानी करनेवाला क़ुर्बानी के जानवर को एक पाक जगह में ले जाता था और ख़ुद उसके अपने सर पर एक ताज होता था और दुआ मांगते वक्त बादशाह और तमाम ईरानियों की भलाई मनाता था। क़ुर्बानी के जानवर को काटने के बाद उस का गोश्त उबाला जाता था और उसके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छोटे छोटे टुकड़े करके उसे घास के ऊपर रख देते थे। इसके बाद माजी एक दुआ पढ़ता था और फिर क़ुर्बानी कराने वाला इस गोश्त को जहाँ चाहता ले जाता था और जो चाहता सो करता था। इरगिली (Ergile) के गाँव में एक ऐसा कतबा या शिलालेख है जिसमें क़ुर्बानो का सीन दिखाया गया है। यह गाँव एशिया माइनर में मनियास झील (ManiyasLake) के पास है। इसमें दो आदमियों की तसवीरें बनी हैं एक के दाढ़ी है जो माजी है। एक मेहराब की शक्ल का निशान है जिसके नीचे एक बैल का कुछ हिस्सा (Protome) दिखाई देता है। दोनों ईरानी दाहना हाथ खोले झुके हुए खड़े हैं। इनके बायें हाथ में एक लम्बी सी चीज़ है। यह एक लकड़ियों का बन्डल है या एक छोटा गदा (Club)। इनके सामने एक मेंढे और एक बैल के सिर पड़े हैं। यह एक बहुत पुराने ज़माने की तसवीर है। शायद पांचवी सदी B. C. की।

माजी मीड्स में से एक क़बीला था। रस्म व रिवाज इल्म और मज़हब के सिलसिले में इन लोगों को ख़ास जानकारी थी। इन की रस्में बहुत पुराने ज़माने की हैं। शायद तारीख़ से बहुत पहले की जबकि हिन्दुस्तानी और ईरानी एक ही क़ौम थे। सासानी ज़माने में यह सब बातें मिल जुलकर एक मज़हबी क़ानूनी किताब (Canon) बनकर अवस्ता में आ गईं जो ख़ुद एक बहुत पुरानी चीज़ है। इस किताब का सब से पुराना नुसख़ा (Copy) सासानी दौर का बताया जाता है और उस में दी हुई बातें, अक़ीदे (मत-भेद) और रस्में माजियों ने सदियों पहले जमा की थीं जिन्हें तीसरी सदी ईसवी में एक सरकारी मज़हब (State Religion) की सूरत प्राप्त हो गई।

इनके यहाँ जनाज़ो (Dead Bodies) को मोमलगा कर ज़मीन में दफ़न किया जाता था मगर माजी किसी भी मुर्दे को उस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वक्त तक दफ़न नहीं करते थे जब तक कोई चिड़िया या कुत्ता उसको फाड़ न डाले। यह दोनों रस्में एक दूसरे से अलग अलग थीं यानी मोम लगा कर गाड़ना और जानवर से मुर्दे को फड़वाना। पहली रस्म ईरानी है और इसीलिए ईरान के बादशाहों के शानदार मक़बरे (Sepulchres) पहाड़ों में काट कर बनाये गये हैं जिनमें बड़ी कारीगरी और सजावट पाई जाती है जैसे कि दाराए आज़म की क़ब्र (Rock Tomb) या सरूसे आज़म का मक़बरा जो बहुत मशहूर है।

दूसरी रस्म माजियों ने निकाली; उन का कहना था कि यमदूत (Angel of Death) के साथ दो कुत्ते आते हैं इसी लिये "सगदीदन" की रस्म निकली यानी मुर्दे के ऊपर रोटी रक्खते और किसी कुत्ते को खिलाते जिस के माने यह होते कि यमदूत आए और मुर्दा सचमुच मर गया। इसके बाद कुत्ते से मुर्दे को फड़वाना बिलकुल एक मामूली बात थी क्योंकि जब कुत्ता मुर्दे के सीने पर रक्खी रोटी के लिए झपटता तो नोच खसोट होना ज़रूरी बात थी और फिर मुर्दे को कुत्ते से फड़वाना आम हो गया। चिड़ियाँ से मुर्दे को फड़वाना हर दख़मे (Silence Tower) में इसलिए आम हो गया, जहाँ पर कि बहुत से गिद्ध इसी लिये पले रहते हैं, कि अविस्ता में मुर्दे और चिड़िया का सम्बन्ध बताया गया है।

पारसियों का दखमा (Silence Tower) बड़ी बड़ी गोल आसमान की तरफ़ खुली हुई इमारतें सुनसान जगहों पर पहाड़ों के पास हुआ करती थीं। यह इमारतें बाद की ईजाद हैं जबकि चिड़ियों से मुर्दे को फड़वाने की रस्म आम हो गई थी। मगर पिछले ज़माने में इसका कोई ज़िक्र या निशान नहीं मिलता जबकि मुर्दे मोम लगाकर दफ़न किये जाते थे।

ईरान के बादशाहों का मज़हब वही था जो सरूस के पुरखे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सूसा में रखते थे। यह मज़हब अनशानी लोगों का था जो बहुत तह-ज़ीवयाफ़ता (सभ्य) होते थे। ख़ुद अनशानी सभ्यता पर बाबुल का असर पड़ा था। क्योंकि बाबुल वालों ने एक ज़माने में ऐलम (Elam) को फ़तह कर लिया था जिसकी राजधानी सूसा थी। इस तरह से हम देखते हैं कि ईरानियों पर जो आरिया नस्ल के थे सामी (Semetic) मज़हब का बहुत असर पड़ा। माज़ी लोगों का मज़हब दूसरी तरह का था। मीडिया, आज़रबाइजान और मैसोपुटामिया के रहने वाले बहुत कमज़ोर अक़ीदे के होते थे यानी Ethically weak थे। उन्होंने अविस्ता के तैयार होने से सदियों पहले बहुत सी ऐसी बातें (मत भेद) और कथानक रचनायें (Religious and Legendary Traditions) जमा कर ली थीं जो बहुत बड़ी हद तक हिन्दुस्तान से मिलती जुलती थीं। यह सब बाद की बातें हैं वरना हुख़मनशी ज़माने में इनका कोई पता नहीं चलता। उस वक़्त ईरान के लोग माज़ी को सिर्फ़ क़ुर्बानी के वक़्त बुलाते थे और उनके यहाँ सिर्फ़ एक ख़ुदाये बरतर (परमेश्वर) [God Almighty] को माना जाता था। इसके मुक़ाबिले में हिन्दुस्तान में हज़ारों देवी देवता थे। अविस्ता में दोनों तरीक़ों को मिला दिया गया है। नतीजा यह निकलता है कि ईरान पर ऐलम की सभ्यता का प्रभाव बहुत गहरा रहा है और अगर माज़ी की कथानक रचनायें (Legends) न होतीं तो कुछ बाक़ी न बचता सिवाये ज़बान के। इन बातों से पता चलता है कि ईरान के सरकारी मज़हब को आरियों से भी कोई सम्बन्ध था।

इस से पहिले कि ईरान के ज़रतुश्ती मज़हब और पैग़म्बर ज़रतुश्त का कुछ हाल लिखा जाये यह जानना अच्छा होगा कि पारसी यानी फ़ार्स के रहने वाले हिन्दुस्तान में कब से हैं। यह तो मालूम ही है

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कि वह आरिया नस्ल के हैं और ईरान से उनका रिश्ता बहुत पुराना है।

"हिन्दुस्तान के पारसी"

मुस्लमानों के ६३७ ईसवी में ईरान जीत लेने के बाद वहाँ के बहुत से पुराने बाशी इधर उधर तितर बितर हो गये जिन में से कुछ ७६६ ईसवी में हिन्दुस्तान पहुँचे और यहाँ सब से पहिले उन्होंने काठियावाड़ को अपना घर बनाया जहाँ उनके दस्तूर (यानी पुजारी) और बहदीन (Laymen-Laity) यानी दूसरे लोगों की दो जातें फैलीं। फिर उनके बड़े पुजारी ने वहाँ से संजन (Sanjan) रियासत को अपना घर बनाया। उनका पहला अतिशकदा सजंन में ७९० ईसवी में बना। वहाँ वह ११०० ईसवी तक रहे। उन्होंने यहाँ पर मेहनत और तिजारत से अपनी हालत को बहुत अच्छा बना लिया। यहाँ से फिर वह और जगह फैले और उनका दूसरा मन्दिर नवसारी (Navasari) में बना। जब वह ईरान से आये थे तो अपने साथ पाक आग लाये थे जिस का नाम "ईरान-शाह" है। आख़िर में इसी आग को १७४२ ईसवी में वह उदवादा (Udwadah) ले गये जहाँ वह अब भी पाई जाती है। "ईरान-शाह" आग जब से ज़रतुश्ती मज़हब क़ायम है यानी चला आ रहा है तब से जलती रही है और कभी बुझाई नहीं गई है। हर "आतिशे-बहराम" में इस आग का हिस्सा शामिल होता है। "आतिशे-बहराम" आग के मन्दिर को कहते हैं। यहाँ की आग १००१ आगों से मिलाकर बनाई जाती है जिस में १६ भिन्न भिन्न जाति और पेशों की आग शामिल होती है। (१) मुर्दे की, (२) रंगसाज़ की, (३) बादशाह के घर की, (४) कुम्हार की, (५) ईंट बनाने वाले की, (६)तांबे का काम करने वाले की, (७) सुनार की, (८) टक्साल के अफ़सर की, (९) लोहार की, (१०) हथियार बनाने

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वाले की, (११) नानबाई की, (१२) शराब बनाने वाले की, (१३) सिपाही की, (१४) गरड़ीये की, (१५) बिजली की और, (१६) पुजारी की आग शामिल होती है।

इरानियों का साल १३२० साल पहले शुरू होता है, इनकी सलतनत जो एक बड़ी सलतनत थी, कहा जाता है २००० बी० सी० से शुरू हुई है और रस्मी तौर पर वहाँ का कथनात्मक इतिहास (Legendary History) जिस में बाद में तारीख़ भी शामिल हो जाती है यूं है। होशंग बादशाह के ज़माने से लड़ाई और मार ढाड़ और दुनिया में बसने वाले बड़े बड़े ख़ूनख़्वार जानवरों और वहशियों से मुक़ाबिला छोड़ कर पारसियों ने खेती बाड़ी और आबपाशी जैसे अच्छे काम शुरू किये। फिर जमशैद के ज़माने में पारसियों का नया साल और क्लेन्डर बना जिसकी याद में नौरोज़े जमशेद होता है। फिर ज़ाल और रुस्तम हुए और बादशाह गुशतास्प के ज़माने में पैग़म्बर ज़रतुश्त पैदा हुए और उसके बाद किसरा और दारा जैसे बड़े बड़े बादशाह हुए जिनके ज़माने में ईरान की सलतनत बढ़कर हिन्दुस्तान में पंजाब तक फैल गई। यह ज़माना तारीख़ से साबित है, और दारा का इरादा योरप तक पर कब्ज़ा करने का था मगर मौत ने उसे फ़ुरसत न दी। ईरान का आख़िरी शानदार ख़ानदान सासानी हुआ है जिस के बादशाहों के नाम बहुत मशहूर हैं। इस खानदान के बादशाह नौशेरवाँ के बाद इस ख़ानदान के बुरे दिन आने लगे यानी ५८० ई० के बाद ताक़त घट गई, सलतनत में कमज़ोरी आ गई और आपस में झगड़े बढ़ गये और मुसलमानों ने इसके बाद ईरान को फ़तेह करना शुरू किया यहाँ तक कि ६३७ ई० में अरबों ने आकर पूरे ईरान पर क़ब्ज़ा कर लिया और वहाँ के लोग तितर बितर हो गये जैसा कि ऊपर आ चुका है

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ज़रतुश्त (Zoroaster)

पारसियों के इस पैग़म्बर के बारे में बहुत कम मालूम है। सही नाम क्या था इसको ठीक ठीक बताना मुश्किल है। अवस्ता में उनका नाम जराथुशतरा (Zarathushtra) आया है और इसके साथ स्पितामा (Spitama) का ख़िताब भी शामिल है। स्पित (Spit) के माने सफ़ेद के हैं और स्पितामा उनका खानदानी नाम था। उशतरा (Ushtra) के माने ऊँट के हैं मगर लफ़्ज़ ज़रथ (Zarath) के अन्दर जो 'था' है उससे माने में मुशकिल पड़ती है नहीं तो इस लफ़्ज़ के माने होते हैं वह जिसके पास सुनहरे ऊँट हों। मगर यह कोई नाम न हुआ। यह कब हुये इस का भी ठीक पता नहीं। यूनानी और लातीनी मुसन्निफ़ (लेखक) और मोअर्रिख़ (इतिहास-कार) इनका ज़माना हज़रतईसा के ज़माने से ६,००० साल पहिले बताते हैं। मगर यह सही नहीं है। बुन्दहिश (Bundahish) की पहलवी इबारत (Text) में उनका ज़माना छठी और सातवीं सदी बी.सी. के लगभग बताया गया है। जो ज़बान गथास Gathas की है इससे मालूम होता है कि पहले वाले हुख़मनशी (Early Achaemenian) बादशाहों के बाद ज़्यादा से ज़्यादा कुछ ही दिनों पीछे उनका ज़माना हुआ है। शायद ६६० बी० सी० से ५८३ के बीच का ज़माना था। मीडिया जो माजियों का केन्द्र था ख़ासकर आज़रबाईजान का इलाक़ा ही ज़रतुश्त की पैदाइश की जगह है और सब से पहले बख़्तर (Bactar) में उन को अपना मज़हब मानने वाले मिले। चिश्पेश (Haytaspes or Tiespes) जो कि दारा अव्वल का बाप था वह बैक्ट्रीयाना (Bactriana) का बादशाह था। एक रिवायत है कि ज़रतुश्त पुरुष-अस्पा में (Pouru-shaspa) और दुग्धा (Dughda) की औलाद थे। शुरू ही से

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वह बड़े महान पुरुष थे और बीस सालकी उम्र में वह दुनिया से अलग होकर अपने मज़हब फैलाने का काम करने लगे। जब वह तीस वर्ष के हुए तो उन पर ख़ुदा की तरफ़ से वही (Revelation) आई और अच्छे ख़्यालात (Anshaspand-Vahumanu) उनके सामने आये और उनको ख़ुदा के तख़्त के सामने ले गये और उन्होंने ख़ुदा से बात की। दस वर्ष के अन्दर उनको ६ बार ऐसा मालूम हुआ, मगर कहाँ तक ऐसा हुआ इस का कोई तारीख़ी सुबूत नहीं है। शुरू में पुजारियों ने, जिनको अविस्ता में कवी और करापान (Karapan) के नाम से पुकारा गया है, उनकी तालीम की बहुत मुख़ालफ़त की। फिर ओहरामाज़दा के हुक्म से वह विश्तास्पा (Vishtaspa) के दरबार में गये और बहुत सी कठिनाइयों के होते हुये भी बादशाह को अपने मज़हब में ले आये। उस वक्त उनकी उम्र ४२ वर्ष की थी। वहाँ उनको बादशाह के वज़ीर जमास्पा (Jamaspa) और उसके भाई Frashaoshtra की सहायता प्राप्त हुई। ज़रतुश्त की लड़की पुरूचिस्ता (Pouruchista) की शादी जमास्पा से हुई और Frashaoshtra की लड़की Hvovi ज़रतुश्त की तीसरी बीवी बनी। अविस्ता के बाद वाले Chapter में और दूसरी पहलवी किताबों में बादशाह के लड़कों के नाम दिये हैं जिनमें एक का नाम Spentodate था जिस को शाहनामें में अस्फन्दयार कहा गया है और उसका भाई ज़ैरी वैरी (Zairi-Vairi) या Zarir नाम का था। यह सब ज़रतुश्ती हो गये। इसके बाद बहुत लोग इस मज़हब में आए और हिन्दुस्तान तक इसका प्रभाव फैला। अपनी उम्र के आख़री सालों में यह पैग़म्बर पवित्र लड़ाइयों में लगे रहे और फिर एक हमले में जो हयानोस (Hyanos) की तरफ़ से था ज़रतुश्त की जान गई। इस फ़ौज के सरदार का नाम Arjasp

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और मारने वाले का नाम Turishiatarakhs था उनकी उम्र उस वक्त ७३ वर्ष की थी (५६३ बी०सी०)। पैग़म्बर की इस्लाहात (Reformations) अविस्ता में दी हैं जिसकी शरह पहलवी ज़बान में है। इसमें हर बात बहुत तफ़सील से दी है और इस मज़हब को मानने वालों के ख़्यालात या विचार इस बारे में बताए गये हैं कि कायनात या ब्रह्मांड (The Cosmogonic Order of Creation) कैसे बनाया गया। इन किताबों की ज़बान हुख़्मन्शी ज़माने के कतबों की पुरानी फ़ारसी ज़बान नहीं है बल्कि उससे मिलती हुई एक और ज़बान है और पुरानी फ़ारसी के मुहावरों (Idioms) के साथ मीडिया के मुहावरे भी हैं जो संस्कृत से बहुत मिलते हैं। इसमें एक ही तरह की ज़बान पाई जाती है और उसके तीन हिस्से हैं। गीत (Gathas) [Hymns], शुरू का हिस्सा, और बाद का हिस्सा। यह गीत प्राचीन हुख़्मनिशियों के ज़माने के हैं। इनमें ज़रतुश्त का यह क़ौल दिया है कि वह पुराने ज़माने की मज़हबी पवित्रता को फिर लाना चाहते थे। दिनकर्त में वहम, शक, जादू और बुरी रूहों को जगाने के ख़िलाफ़ बहुत कुछ कहा गया है। इस मज़हब की बुनियाद रौशनी और अन्धेरे के दो उसूलों पर है जिनको अच्छाई और बुराई भी कह सकते हैं। यह दोनों ताकतें हमेशा एक दूसरे के ख़िलाफ़ रहती हैं और कभी एक बढ़ जाती हैं और कभी दूसरी। पूरी काएनात (Universe) दो हिस्सों में बटी है और बीच में एक बड़ी खाड़ी है जिसके दोनों तरफ़ से यह दोनों ताकतें बढ़ती और लड़ती हैं। उर्मुज़्द (Ormuzd) ने सिर्फ़ अच्छी ताकतें बनाई और अहरीमन (Ahriman) बुराई पैदा करता है ताकि अच्छाई को खत्म कर दे। अरस्तू ने जिसे ज़रतुश्त का नाम मालूम नहीं था इन दोनों ताकतों को लड़ाई को मान लिया है उर्मुज़्द को सने Zens कहा है और अहरीमन को

Digitization by American Academy of Islamic Studies. AAIS(USA)

Hades कहा है। आख़िर में उर्मुज़्द की फ़तह होगी और अच्छाई बुराई को जीत लेगी। सासानी जमाने में वहदानियत (Manotheism) का ज़ोर शुरू हुआ यानी एक ख़ुदा या ताक़त को माना गया जिसका ज़िक्र ज़रवना (Zrvana) और अकरना (Akarana) के नाम से अविस्ता के आख़िर में आया है।

अच्छाई और बुराई की ताकतें अपने अपने साथ जन्नत और दोज़ख—स्वर्ग और नरक की एक एक फ़ौज़ भी रखती हैं। जन्नत की फ़ौज का सरदार ओहरामाज़दा यानी पाकरब है जिसके ६ वज़ीर होते हैं और वह इन सब का सरदार (Head) होता है। इन वज़ीरों को यह नाम दिये जाते हैं। १. बहमन, वहुमान (Vohuman) यानी अच्छा ख़्याल, २.अर्दीबहिश्त [आशा.बहिस्ता] (Ashabahista) यानी सबसे अच्छी नेकी (Virtue) ३. शहरेवर, कश्थराबैरिया (Khahathra Vairya) यानी ऐसी सलतनत जिसकी ख़्वाहिश हो (The Desired Empire) ४. इस्फन्दियार [इस्पन्द्रमिध] (Sipandarmidh) या स्पेन्टाआरमेटी (Spantaarmaiti) यानी फ़ईयाज़ी से दुनिया छोड़ देना (Generous Renunciation) ५. ख़ुरदाद (हुरावातात) (Haurvatat) यानी सेहत (Health) ६. मुरदाद (ऐमेरेतात) (Ameretat) यानी अमर होना (Immortality) बाईबिल, क़ुरान और दूसरे मज़हबों की किताबों में भी फ़रिश्तों के नाम आये हैं जैसे जिबराईल, मीकाईल, इसराफ़ील आदि इन ज़रतुश्ती ख़ुदाई वज़ीरों का काम अलग अलग मख़लूक़ (Creation) की हिफ़ाज़त करना समझा जाता है जैसे काम के जानवर बहमन के मातहत, अर्दीबहिश्त के मातहत आग, शेहरेवर के मातहत धातुएँ, अस्फ़न्दियार के मातेहत ज़मीन, ख़ुरदाद के मातहत पानी और मुरदाद या अमिरतात (अमिरदाद) के मातहत पेड़। कुछ महीनों,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हफ़्तों, दिनों और फूलों के नाम भी इन नामों पर आते हैं। इस दर्जा बन्दी में नीचे को बहुत से यज़्त (Yazatas) आते हैं यानी वह जिनकी पूजा की जाए। सब मिला कर छोटे देवता २४ माने जाते हैं। मगर एक कहना यह भी है कि इनकी तादाद हज़ारों है और अविस्ता में ऐसा ही दिया हुआ है। ईरानियों के विश्वास के अनुसार हवा में रूहें भरी पड़ी हैं और इन में से ख़ास ख़ास रूहों के नाम पर किसी महीने या दिन या और चीज़ का नाम पड़ा है। जिन्नो (Genii) को आसमान और ज़मीन का अलग अलग माना गया है और अहोरामज़दा आसमानी देवताओं में सबसे बड़ा है और ज़रतुश्त ज़मीन वालों में। इन सब के नाम सूरज, चाँद, सितारों, हवा, आग, पानी या ख़्याली अच्छाइयों या ऐसे ही ख़्यालात (Abstract ideas) के नाम पर हैं, जिनकी कोई शकल क़ायम नहीं की जा सकती (Which have got no form and can not be defined) जैसे जीत (Victory), सच्चाई (Truth) अमन (Peace) और ताक़त (Power)। अतर (Atar) यानी आग ओहरामाज़दा का लड़का है। आपो (Apo) यानी पानी की बहुत क़द्र है। हवारेख़शेता (Huarekhshaeta) यानी चमकता सूरज ओहरामाज़दा की आँख है। उसके बाद चाँद (माह) और सितारे (Tishtra) आते हैं। मिथरा (Mithra) रोशनी और सच्चाई का देवता है। इस की मूर्तियाँ बहुत सी जगहों पर पाई जाती हैं। इस को एक मर्द की सूरत में एक बैल का गला काटते हुए दिखाया जाता है। सरूशा, मिथरा, रश्नू और फ़िरावशी (Sraosha, Mithra, Rashnu, and Fravashi) यह सब दुनिया की रखवाली करने वाले फ़रिश्ते हैं और इन्सान के पैदा होने से पहले आसमान पर थे और मरने के बाद रूह से मिलते हैं। इनका

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काम यह होता है कि बुराई (अहरमन) के ख़िलाफ़ ओहरामाज़दा की मदद करें।

फ़रवर्दीं का महीना फ़िरावर्तीश (Fravartish) के नाम पर है और वेरेथरागना (Verethraghna) जिस के माने जीभ के हैं उस से मिर्रीख़ (Mars) सितारे के लिये वराहरान (Varahran) या बहराम निकला जो बहुत मशहूर है। इसी तरह वता हवा के लिये, आसमान आकाश के लिये और ज़ेम (Zem) ज़मीन के लिये अलग अलग ऐसे देवताओं के नाम हैं जिनकी शक्लें भिन्न भिन्न हैं। (Haoma) एक पवित्र पेड़ है जिससे अमृत मिलता हे। इसे हिन्दुस्तान में सोम (Soma) कहते हैं। इससे मालूम होता है कि इसकी पूजा बहुत दिनों से हो रही है।

बुराई और अच्छाई की लड़ाई रहती है। बुराई को उगरामनयुव (Ungraminyu) यानी अहरमन कहते हैं। इसके नीचे बहुत से (Divs) हैं यानी (Demons) हैं। इससे मिलता हुआ एक शब्द संस्कृत में देव (Déva) है जो देवताओं के माने में आता है यानी (Daeva) या (Divs)। इसी ताक़त का नाम बुरा ख़्याल, बग़ावत और झूठ है और यह नाम बहिरतून के कतबों में आया है। इसका काम अच्छे कामों में बाधा डालना है और उसे अगर यह नष्ट न कर सके तो बिगाड़ ज़रूर देता है। यह बुराई का पैदा करने वाला है और इसकी तरफ़ से (Paityara) यानी Monsters या (Diabolical, Creations) यानी राक्षस वग़ैरा पैदा होते हैं। जब कि ओहरामाज़दा ने ज़िन्दगी पैदा की उस वक्त एहरमन ने मौत पैदा की जिसके रहने की जगह हमेशा ऐसा अंधेरा है जिसका कोई अन्त नहीं है। एक दिन इन दोनों की लड़ाई ख़त्म होगी और अच्छाई की जीत होगी।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दोज़ख़ (नरक) में Divs, Drujes, Durvants, Peris (Pairika,) Dragons, अज़दहे, Monsters और देवपेकर अजूबा हस्तियाँ बुराई की तरफ़ से अच्छाई के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए पैदा की गई हैं। यह सब की सब उत्तर में रहती हैं। नरक का दरवाज़ा अलबुर्ज और Arezura पहाड़ों में है। ख़ास तौर से जुर्जान समुद्र के किनारे माज़िनदरान का जो सूबा है वह इन के रहने की खास जगह है। यह Divs गुनाह (पाप), ग़लतियों और बीमारियों का रूप धारण किये इनसान को आ दबोचते हैं। दिन की रोशनी से यह भागते हैं। मज़हबी दुआओं और रूसूम से इन्हें तकलीफ़ पहुँचती है। क्योंकि ज़रतुश्त इनका सब से बड़ा दुश्मन है। माज़ी का कहना है कि बुरी रूहें भी इसकी ख़िदमत करने पर मजबूर हैं। अविस्ता की एक पूरी किताब देवों (राक्षसों) से लड़ाई करने के बारे में है। इसे वेंदीदाद (Vendidad) या (Vidaeva-data) यानी देवों के विरुद्ध क़ानून के नाम से याद किया जाता है।

Ahrisman के साथ ६ देव हुए हैं जिनमें से ३ हिन्दुस्तान के देवता के नाम पर हैं Indra, sarva और Nasatya जिनकी शक्ल बदलकर Indra, Saurn और Naosihaitya से ली गई है। (Aka-Mano) यानी बुरा ख्याल (Vohu-Mano) अच्छे ख्याल के बरखिलाफ़ है। Aeshma जो क्रोध और बरबादी का देव है उसका दूसरा नाम (Asmodens) है जो ईसाइयों के यहाँ भी आ गया है। इसका मुक़ाबला Yazate-Sraosha करता है जो मज़हका आज्ञाकारी और पूजा पाठ का देवता है।

Druj झूट का देव है। जिससे Darvant निकला है जिसके माने नटखट, शरारत करने वाले और नास्तिक के हैं। अविस्ता

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के बाद वाले हिस्से में इनको देव कहा गया है जो जीलान (Gilan) की दलदलों में रहते हैं। दुरूग़ एक देवी का नाम है जो मुर्दों (Dead Bodies) से मिलकर बनी है और बहुत नापाक और गन्दी है और जो मक्खी की शकल में आती है और जब लाश को या मुर्दा जिस्म को कुत्ता देखता है या मुर्दे के पास कुत्ते को लाते हैं और जिस रस्मको 'सगदीद' (Sagdid) कहते हैं उस वक्त मुर्दे से वह मक्खी उड़ जाती है और जिन्दा के पास से वह मक्खी Barashnum या नौ दिन की पाकी की रस्म अदा करने पर उड़ जाती है। दूसरा दरोग़ Azhi Dahaka है। इसको एक अरब बादशाह बताया गया है जो इरानियों के विरुद्ध था। दहाक का दूसरा नाम Biverasp था यानी 'दस हज़ार घोड़ों वाला'। ईरानियों ने यह नाम एक अजदहे को दिया। अवस्ता में इस देव—पैकर अजदहे की शक्ल यूं दिखाई है कि इसके तीन सर हैं, ६ आखें हैं और तीन मुंह हैं। शाह-नामे में इसके कन्धों से दो साँप निकलते बताए गए हैं जिनको रोजाना दो मनुष्यों का भेजा खिलाया जाता था। इस बादशाह की राजधानी बाबुल थी। शायद इस बात में बाबुल वालों के ज़ुल्म की दासतान (कहानी) छुपी है जिन्होंने ईरानियों को सताया होगा और ऐसा इस ज़माने का हाल होगा जब वहाँ (Susiana) और (Fars) के पहाड़ी इलाक़ों की हुकूमत होगी जिसकी वजह से बादशाह का ऐसा बुरा नाम पड़ा। इस देव को फ़रीदूँ यानी (Thraetaoa) ने हराया और (Dema-vand) पहाड़ के नीचे क़ैद कर दिया। यहाँ से ईरान की दूसरी तारीख़ शुरू होती है जो उसकी नई ज़िन्दगी है। Yatus यानी जादूगर और परी यह सब अपना बुरा असर ज़मीन, पानी, आग, सबेशी और पेड़ों पर डालते हैं। वह सितारों पर जादू कर देते हैं ताकि पानी बरसना रुक जाये और सितारों को Meteors बनाकर गिराते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मौजूदा दुनिया बारह हज़ार साल के बाद ख़त्म हो जायगी। यह पूरा ज़माना तीन तीन हज़ार साल के अलग अलग कई हिस्सों में बँटा है। पहले तीन हज़ार साल (Spiritual Creation) के हैं। (Ahriman) अंधेरे से निकलता है और रोशनी से चकाचौंध होता है। (Ormuzd) उसे अमन देता है और जब (Ahriman) उससे इनकार करता है तो (Ormuzd) उससे नौ हज़ार साल की लड़ाई की तजवीज़ पेश करता है और उसको यह इल्म है कि अन्त में बुराई का खात्मा हो जाएगा। दूसरा तीन हजार साल का ज़माना (Material Creation) का है। Ormuzd, अमशस्पंदस Amshaspands यानी Holy Immortals पैदा करता है जो Good thought. Best virtue, Desired Empire, Generous Renunciation, Health और Immortality हैं। यानी उनका नाम ईरानी ज़बान में बहमन, अर्दीबिहश्त, शेहरेवर अस्फ़न्दियार, खुरदाद और मुरदाद हैं। फिर आसमान, पानी, ज़मीन, पौदे, जानवर और आदमी को पैदा किया। तीसरे ज़माने में हमको इनसानियत के बीच अच्छे और बुरे की लड़ाई नजर आती है। यह पहले आदमी Gayomard क्यूमर्स से शुरू होकर Zoroaster के आने और उसकी इसलाहों के Vista नामी बादशाह के जमाने में कुबूल किये जाने तक फैला है। चौथा जमाना Zoraoster के आने से शुरू होकर क़ियामत के दिन तक जाता है फिर मुर्दे दोबारा जिन्दा होंगे। Ormuzd को Ahriman पर जीत होगी और फिर बराबर अच्छाई का राज होगा।

ज़रतुश्ती मज़हब में रूह soul को अमर समझा गया है। मरने के तीन दिन बाद तक रूह मुर्दा जिस्म के चारों तरफ़ मंडलाती है और जैसे ज़िन्दगी में होता हैं उसी तरह खुशी और रंज को महसूस करती है। फिर हवा उसे उड़ा ले जाती है और चिनवत

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA).

के पुल (Chinvat Bridge-Chinvato peretu) पर ले जाती है। जहाँ उसे ३जजों की अदालत के सामने आना पड़ता है यानी Mithra, Sraosha और Rashnu यह तीनों उस रूह के कामों को जो उसने ज़िन्दगी में किये हों तोलते हैं और जिधर पलड़ा झुके वही फैसला समझा जाता है। यह ख़्याल मिसरी और दूसरे कई मज़हबों में भी पाया जाता है। फिर रूह Chinvat Bridge से गुज़रती है जो नरक के ऊपर Alburz पहाड़ से लेकर Daitya तक बना है। यह पुल अच्छे आदमी की रूह के लिये चौड़ा और आसान है लेकिन जब गुनहगार रूह उस पर से गुज़रती है तो यह इतना पतला हो जाता है कि रूह नीचे गिर पड़ती है जहाँ अँधेरा इतना ज़्यादा होता है कि कहने को इस अँधेरे को हाथों पर उठाया जा सकता है।

अच्छे ख़्यालात, अच्छे अलफ़ाज़ और अच्छे काम की हद (सीमा) से गुज़रने के बाद अच्छी रूह रोशनी के हिस्से में पहुँच जाती है जो गानों का स्थान (Abode of Songs) है और इसे Garonmana कहते हैं जो (Anho-Vahista) यानी ईरानी बहिश्त कहलाती है। जिन लोगों को दोज़ख़ में गिरना होता है वह वहाँ पहुँच जाते हैं। जन्नत और दोज़ख़ के बीच में Purgatory हैं। जहाँ अच्छे बुरे काम बराबर हो जाते हैं। इसको Hamestakan भी कहते हैं, यानी वज़न के बराबर होने की जगह। इस जगह रूह कियामत तक रहती है। आख़िरी दिन का ऐलान एक आने वाले और सबको बचानेवाले मसीहा के ज़रिये (द्वारा) होगा जिसका नाम Saoshyant है, जो दुनिया को क़ियामत के बाद फिर से नया करेगा। ऐसा आख़िरी फ़ैसले के दिन (Last Judgement day) के पहले होगा। तमाम ज़मीन पर पिघला हुआ धातु डाल दिया जायगा। उसका एक सैलाब आयगा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जिससे ज़मीन पाक हो जायगी। इसके बाद Ormuzd और Ahriman की लड़ाई होगी जिसमें आख़िरी चीज़ यानी बुराई बिल्कुल ख़त्म हो जायगी।

सासानियों के ज़माने में ज़रतुश्ती मज़हब सरकारी मज़हब था। इस मज़हब के साथ और बहुत से मुख़्तलिफ़ फ़िरक़े पैदा हो गये जिनके ख़्यालात दूसरे थे। Vendidad के पहले अध्याय में यह माना गया है कि दखमा या Silence Tower ईरान में सब जगह नहीं थे। यहाँ तीन ख़ास फ़िर्क़े थे। पहले ज़रतुश्ती था। दूसरे जरवनती (Zervanites) जिसमें कहा जाता था कि Ormuzd और Ahriman से पहले Infinite Time यानी [Zrvau Akarana] था। तीसरा Gayomarthian था यानी क्यूमर्स का फ़िरक़ा जिसका कहना था कि Ahriman की पैदाइश Ormuzd के एक शक (Doubt) से हुई है। दो नास्तिक फ़िरक़े [Heretic Sects] सियासी अहमियत रखते थे। एक मानी का (Manichaeism) जिसके मानने वाले योरप और एशिया में फैले हुए थे और दूसरा Mazdak का जो इश्तराकियत या Communism पर क़ायम था। यह दोनों ईरानी सलतनत को ख़त्म करने के लिये फैलाये गये थे।

मानी मज़हब (MANICHAEISM)

इस मज़हब की कुछ पुरानी किताबें (Manuscripts) पहलवी और तुर्की ज़बानों में लिखी हुई मध्य एशिया में मिली हैं। इससे पहले मुसलमान और ईसाई लोगों ने इस मज़हब पर जो लिखा दुनिया केवल उसी को जानती थी। मगर इन पुरानी किताबों से बहुत सी नई बातें मालूम हुईं। १९वीं सदी के आख़िर में रूस के कुछ काम करने वालों ने रेत के अन्दर दबे हुए काग़ज़ात पाये जो बाद में मानी मजहब की किताबें साबित हुईं। इसको एक अजीब बात

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समझा गया। इनमें से एक किताब का नाम Khwastuanift था। इन किताबों से ईसाइयों, मुसलमानों और चीनियों ने जो कुछ मानी मज़हब के बारे में लिखा है उसकी जाँच हो जाती है। खुद मानी ने लिखा है कि Nahr Kutha के इलाके में जो बाबुल के सूबे में एक गाँव Mardinu में वह (मानी) २१५ A. D. में पैदा हुआ। १३ साल की उम्र में खुदा की तरफ़ से उस पर वही आई यानी २२८ A. D. में। फिर २५ वर्ष की उम्र में यानी २४० A. D. में फिर वही आई और उसको अपने मज़हब को फैलाने का काम मिला। इस ज़माने में शापुर अव्वल (First) के तख़्त पर बैठने के वक्त वह लोगों के सामने अपना मजहब लेकर आया। बाबुल में जहाँ सब तरह की क़ौमें बसती थीं और इस तरह के और मज़हब भी फैले थे जिनमें से एक Subau नाम का आज भी है और जिस पर Gnosticism का गहरा असर पड़ा था और जो उल्टी अक़्ल के हो गये थे। दिन और रात के उलट-फेर को देखकर उन्होंने रौशनी (अच्छाई) और अँधेरे (बुराई) का ख़्याल क़ायम किया और ज्योतिष और जादू जगाया।

इस जगह मानी ने अपना मज़हब फैलाया। मानी का बाप फ़तक-बाबक (Fatak Babak) जो Abu-Barzam का लड़का था इसे किसी फ़रिश्ते ने गोश्त, शराब और औरतों से परहेज़ करने को कहा। वह साबी हो गया और अपने लड़के को भी साबी बनाया लेकिन मानी ने वहियों के बाद जो At-Tawam के ज़रिये इस तक पहुँची थी एक ऐसे दो ताकतों वाले Dualistic मज़हब को फैलाना चाहा जिसका उसूल बहुत सख़्त और बाक़ायदा हो। उस ने बुराई को हमेंशा से मौजूद समझा और हवा, ज़मीन और आग को दो रूप दिए एक अच्छा और एक बुरा। उसने सिवाय रोशनी और अन्धेरे के किसी और बात को आपस में एक दूसरे से मिलता हुआ नहीं समझा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Gnosis की सही पहचान पर ज़ोर दिया और अपने को Paraclete कहलाया जो ईसा का बताया हुआ एक ऐसी दुनिया को आराम पहुँचाने वाला समझा गया था जिसके ज़रिये ख़ुदा की सचाई लोगों तक पहुँचने वाली थी। मानी ने बहुत कुछ लिखा। एक किताब पहलवी में थी जो शापुर अव्वल के नाम थी। मगर दूसरी किताबें Syriac में थीं। उसकी किताबों में बहुत सी तस्वीरें होती थीं जो बहुत मशहूर हैं और इसकी वजह से मानी को तस्वीर बनाने वाला माना गया। इन तस्वीरों में रोशनी को चमका देने वाली खूबियां (Luminous virtues) और अन्धेरे की ताक़तें दिखाई गई हैं जिन में से पहली चीज़ को लोग अच्छा समझते हैं और दूसरी को बुरी और यह तस्वीरें उसने पढ़े लिखे लोगों को समझाने के लिये बनाई थीं। कहा जाता है कि शापुर अव्वल ने दस वर्ष तक मानी का मज़हब माना। फिर वह मज़दी हो गया और मानी ईरान से निकलकर कशमीर आया। फिर तुर्किस्तान और चीन गया और जब तिब्बत पहुँचा तो ख़तों से उसने अपने मानने वालों को अपने मजहब पर जमाया। तुर्किस्तान के लोग उसको पक्के तौर पर मानते थे। तुर्की जबान में उसके मजहब के बारे में बहुत कुछ मिलता है। मानी के मानने वाले समझते थे कि शापुर के मरने पर २७२ ई० में, हुर्मुज़्द के बाद २७३ ई० में, बहराम अव्वल के तख़्त पर, बैठने पर मानी अपने वतन को लौट आयेगा। लेकिन मोबिद ताक में थे और दो वर्ष बाद उसको पकड़ लिया, खाल उतारी, सर काटा और खाल में भुसभर के जन्दे शाहपुर के दरवाजे पर लटका दिया। March 275 A. D.

मानी का मजहब इस तरह तरतीब दिया गया था कि उस में ऊपर की तरफ़ बारह मास्टर हुए थे जिनके नीचे ७२ शार्गिद या Bishop और नीचे दर्जे के लोग होते थे। सबसे आख़िर में

Digitization by American Academy of Islamic Studies. AAIS(USA)

Nigoshak या सुनने वाले होते थे जिनको ग़ैर मज़हबी ओहदेदार (Layman) भी कहा जा सकता है। मानी ने अपना जानशीन मुकर्रर कर दिया था। हो सकता है यह सब मज़हबी ओहदेदार अपना जानशीन खुद नामजद कर देते हों सिवाए कुछ के जिनको चुना जाता था जैसे Elect जिन्हें सुनने वाले चुनते गाने गाते मुक़द्दस किताबों को पढ़वाकर सुनते क्योंकि उनको इस का बहुत शौक़ था। यह लोग हाथ से नई किताबें लिखते रहते थे यानी नक़ल करते रहते थे। मानी की तालीम में दो ताक़तें मानने का उसूल फैला हुआ था। दुनिया की बुनियाद दो अलग अलग उसूलों पर थी जो एक दूसरे की ज़िद थे; मगर दोनों हमेशा रहने और कभी एक दूसरे से न मिलने वाले थे। खुदा अच्छाई या रोशनी का पैदा करने वाला समझा जाता था और शैतान बुराई या अन्धेरे का पैदा करने वाला समझा जाता था। इनकी सलतनतें हमेशा के लिये थीं। मगर शैतान की हुकूमत नीचे की तरफ़ दक्षिण में समझी जाती थी। शैतान का इरादा है कि रोशनी वाले मुल्कों को जीत ले। मगर खुदा जो सब बड़ाई का बाप है अपनी मदद के लिये पाँच इन ताक़तों को नहीं बुला सकता जिन का काम अमन फैलाना है। वह ताक़तें Understanding, Reason Thought, Reflection and Will Power हैं। फिर उसने जिन्दगी की माँ (Mother of Life) को पैदा किया। जिससे पहला आदमी पैदा हुआ। इस आदमी को शैतान ने हरा दिया। इससे बड़ी हलचल मची। अच्छाई बुराई मिलकर एक हो गईं मगर इससे हमला करनेवाले का ज़ोर कम हो गया। बड़ाई के बाप ने अपने दोस्त रोशनी को बुलाया जिसने Great-Ban को बुलाया और उसने Living Spirit को जिसने बन्दी आदमी से ताल्लुक़ क़ायम किया और उसे आज़ाद कराया। इस तरह से दुनिया पैदा हुई।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यही दो ताक़तें इन्सान में पाई जाती हैं जो एक दूसरे से आपस में लड़ती हैं। चमकते हुए ख़्यालात, जज़्बे और समझ का मुक़ाबिला अन्धेरे ख़्यालात, जज़्बे और समझ से होता है। पहले की पैदावार रहम, अच्छाई, अक़ीदा, सब्र और अक़्ल हैं और दूसरे का नतीजा नफ़रत, अपने को सब कुछ समझना, गुस्सा और बेवकूफ़ी हैं। अच्छा चाल चलन रखना और हर बुरी बात से बचना, दुनिया से अलग रहना, मज़हबी Elect के लिये ज़रूरी था। वह न जानवर से कोई ग़िज़ा ले सकते थे और न ऐसी चीज़ पी सकते थे जिस में ख़मीर (Yeast) उठा हो। किसी जानदार को मार नहीं सकते थे चाहे जानवर हो या पौदा और औरतों से अलग रहते थे। उनसे नीचे जो Laymen होते थे उनके लिये इतनी सख़्ती नहीं थी। वह सिर्फ़ वुत परस्ती से परहेज़ करते थे और झूठ नहीं बकते थे। लालच, क़त्ल और Heterodoxy से बचते थे।

दुनिया एक Cataclysm में फँसकर ख़त्म होगी और वह दोज़ख़ के ग़ार में गिर जाएगी जहाँ उसके Elements ऐसे जलेंगे जैसे भट्टी में, और फिर ऊपर से एक पृथ्वी के बराबर पत्थर से ढक दी जावेगी जिससे गुनहगार रूहें बन्धी होंगी। मज़हबी आदमी Elect जन्नत को चला जायगा और Hearers जिन्होंने स्वर्गीय क़ायदों को कुछ भी माना था दूसरों के जिस्म में दाख़िल होंगे उस वक्त तक के लिये जब तक कि अन्तिम मुसीबत न आए और गुनहगार दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे। अच्छाई और बुराई अपनी पहली शक्ल में आने पर एक दूसरे से हमेशा को अलग रहेंगी और उनके बीच में ऐसी रुकावट होगी जो पार नहीं की जा सकती। इस मज़हब की तालीम दुनिया में हर जगह फैल गई। मानी की तहरीरें Babylonia में आईं फिर शाम, फिलसतीन और उत्तरी अरब में जहाँ नबती

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आबाद थे। यहाँ से यह मज़हब आरामी ज़बान में आ गया और फिर मिश्र पहुँचा, जहाँ ख़ुदा की पहचान का मज़हब (Gnosticism) फैला हुआ था। यहाँ Monks में यह मज़हब फैला जिन्होंने इसे आगे बढ़ाया। मिश्र से यह मज़हब उत्तरी अफ़रीक़ा और Carthage आया जहाँ से इसके लातीनी तरजुमे हुए। तीसरी सदी से छटी सदी ई० तक यह यूं ही फैलता रहा। स्पेन में चोदहवीं सदी में बहुत से मानी मज़हब के मानने वाले पाये जाते थे। रोम में भी लोग इसको मानते थे। ३७२ से ५२३ ई० तक का यही हाल है। मानी की किताबें एशिया माईनर और Byzantine मुल्क में फैलीं और ईसाईयों ने इसको न माना और इसे खत्म करने की कोशिश की। Babylonia में जहाँ यह मज़हब शुरू हुआ बहुत दिनों तक रहा और अब्बासी दौर के अरबी लेखक भी इसको जानते थे।

मज़दक का मज़हब

मज़दक के बाप का नाम Bamdad था वह नैशापुर में पैदा हुआ। उसके मज़हब से सलतनत में बड़ी गड़बड़ी फैली। वह मानी का शागिंद था। वह भी रोशनी और अन्धेरे को मानता था मगर उसके ख़्याल में रोशनी के फैलने का ज़्यादा मौक़ा था और अन्धेरे का कम क्योंकि उसका कहना था कि रोशनी तेज़ और समझदार होती है और अन्धेरा अन्धा और बेवकूफ़—वह खुद मिल जाते थे और मौक़ा मिलने पर अलग हो जाते थे। दुनिया की पैदाइश तीन चीजों से थी पानी, आग और ज़मीन जिनसे मिलकर अच्छाई और बुराई पैदा हुई। अच्छाई इन चीज़ों के पाक़ हिस्सों से बनी और बुराई नापाक हिस्सों से। Mazdak का ख़्याल था कि रूहानी दुनिया इस तरह से बनी है। बहिश्त का मालिक अपने तख़्त पर एक बादशाह की तरह बैठा है और उसके सामने ४ ताक़तें खड़ी हैं। मालूम

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करने की ताक़त [Discernment], समझ [Intelligence.], याददाश्त [Memory] और ख़ुशी (Joy)—यह चार ताकतें सात वजीरों के ज़रिये दुनिया का इन्तिज़ाम चलाती हैं। इनमें से ६ यह हैं १ सालार [General], २ पेशकार [President], ३ बलवान या [Barvan] इसके मानी साफ़ नहीं हैं। हो सकता है इसके मानी पहलवान [Champian] के हों, ४ कारदान या काम जानने वाला [Experienced], ५ दस्तूर [Minister] और ६ कौदक (लड़का-Boy)। यह सात वज़ीर नीचे दी हुई १२ रूहानी हस्तियों में चलते फिरते रहते थे १ ख़्वानन्दा [बुलाने वाला], २ देहनदा [देने वाला] ३ सितन्दा [लेनेवाला], ४ बरिन्दा [ले जानेवाला], ५ खुरिन्दा [खाने वाला], ६ दविन्दा [दौड़ने वाला], ७ खेजिन्दा [उठने वाला], ८ कुशिन्दा (जान से मारनेवाला), ९ ज़नन्दा [पीटने वाला] १० कनन्दा (खोदनेवाला), ११ आयनदा [आनेवाला], १२ शाविन्दा [होनेवाला], Shahrastani ने इनके अलावा एक तेरहवां और लिखा है जिसका नाम पायन्दा [खड़ा होनेवाला] है। जो भी अपने में चारों ताक़तों सातों वज़ीरों और सब रूहानी हस्तियों को जमा कर ले वह देवता हो जाता है और फिर उस पर दुनिया की कोई ज़िम्मेदारी नहीं रहती।

ख़िलाफ़ ताक़तों (Contradictions) यानी नफ़रत और जंग को ख़त्म करने के लिये जो कि बुराई और अन्धेरे से पैदा होती हैं मज़दक ने इन के उसूल को बदल दिया जो औरतों की ख़्वाहिश और चीजों पर कब्ज़ा करने की वजह से बना था। इस लिये इस रुकावट को दूर करने के लिये इसने औरतों को बिला किसी फ़र्क़ के सबके लिये आम कर दिया। यानी दूसरे लफ़्ज़ों में औरतों में साझा करा दिया [Community in women] यानी मिलकियते

Digitization by American Academy of Jain Studies. AAIS(USA)

मुशतरेका करा दी) और इसी तरह सामान और जायदाद में सब लोगों का बराबर का हिस्सा था जैसे पानी, आग और हवा में होता है।

ऊपर की दुनिया में बादशाह ऐसे लफ़्ज़ों के ज़रिये हुकूमत करता था जो खुदा के नाम में शामिल होते हैं। जब इनसान इन लफ़्ज़ों पर ग़ौर करता है तो पूरा राज़ (भेद) उसको मालूम हो जाता है। और जो ऐसा न कर सके तो वह हमेशा जिहालत, भुलावे, बेवकूफ़ी और उलझाओं में रहता है। यह वह चार ताक़तें हैं जो रूहानी ताक़तों के खिलाफ़ हैं।

मज़दकी चार फ़िर्कों में बँटे थे। एक (Kudhakites) जो सूसियाना, फ़ार्स और शहरीज़ोर में रहते थे। दूसरे अबू मुसलिम को मानने वाले, तीसरे (mahanites) और चौथे (Ispidyamakites) इस नाम से ज़ाहिर होता है कि वह लोग सफ़ेद कपड़ा पहनते थे। आखिरी तीन फ़िर्के Turkestan या Sogdiana में थे।

दुनिया में बुरे आदमियों, बेकारों और मुजरिमों की तादाद ज़्यादा है। इस लिए समाजी सुधार करने वालों ने जो क़ानून बनाये हैं वह आम लोगों के लिये नहीं बल्कि ऋषियों और मुनियों के लिये हैं। ईरान में भी ऐसा हुआ। लोगों ने इस बराबरी के ज़ब्बे की बड़ी क़द्र की और यह इतना बढ़ा कि हुकूमत के निज़ाम में खराबी पड़ गई और इस नये फ़िर्के को खत्म करने के लिए बड़ी कोशिश करनी पड़ी और खुसरो अन्वल से पहले मुश्किल से इस पर काबू पाया जा सका। मज़दक की एक किताब भी थी जो अब नहीं मिलती है। इसके दो तरजुमे भी हुए मगर अब किसी का पता नहीं है।

BIHAFRID

Abu Muslim के जमाने में इस नाम का एक आदमी नीशापुर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के इलाक़े में पैदा हुआ। वह चीन गया। वहाँ सात वर्ष रहा; वहाँ से वह एक ऐसी रेशमी क़मीज़ लाया जो इतनी नर्म और उमदा थी कि उसको मोड़कर हथेली के गड्ढे के अन्दर दबाया और बन्द किया जा सकता था। एक बार रात को वह एक मन्दिर में गया और सुबह जब वहाँ से लौटा तो उसे एक किसान मिला जो खेत जोत रहा था। उसने किसान से कहा कि मैं आसमान से आया हूँ, मैं ने वहाँ जन्नत और दोज़ख़ देखी हैं और मुझे वहाँ से पहनने की क़मीज़ मिली है जो यह है। और अब मैं ज़मीन पर भेज दिया गया हूँ। किसान ने उसकी बात पर यक़ीन किया और इस बात की चर्चा करते हुए गवाही दी कि उसने उसको अपनी आँखों के सामने नीचे उतरते देखा। इसके बाद बहुत से मज़दी उसको मानने लगे। इसने खुद जरतुश्ती मज़हब क़ुबूल कर लिया मगर कुछ रस्में अपने मजहब में दूसरी रक्खीं। उसका कहना था कि खुदा ने उसके ज़रिये से एक नया मज़हब भेजा है। इसने ७ किस्म की दुआएँ मांगना बताया (१) खुदाए वाहिद के लिये (खुदा के एक होने पर), (२) जन्नत और ज़मीन के पैदा करने पर, (६) आम तख़लीक़ (Creation–सृष्टी) और जानवरों के खाना खाने पर (४) मौत पर, (५) दुनिया के फिर से उठने [Resurrection and Day of Judgment] पर (६) उनके बारे में जिन्हें खुदा पसन्द करता है या जिन्हें बरबाद करता है और (७) जन्नत के रहने वालों पर। उसने फारसी जबान में एक किताब भी लिखी और अपने मानने वालों को ताकीद की कि सूरज के (Substance) यानी असली माद्दे की पूजा करें जिसमें घुटना ज़मीन पर टिका हो। और हमेशा नुंह सितारे की तरफ़ रक्खें चाहें वह कहीं हो। अपने बाल बढ़ायें, खाने के वक्त बुदबुदा कर और ज़ोर से दुआ न मांगे, छोटी उम्र वाले मवेशियों को उस वक्त तक कुर्बानी न करें जब तक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वह बेकार न हो जायें। शराब न पियें और ऐसे जानवरों का न खायें जो एकबारगी मर गये हों। Khwatakdas शादियाँ जो क़रीबी अज़ीज़ों के बीच में होती हैं बन्द कर दें और अपनी औरतों को ४०० दिरहम से ज्यादा दहेज़ न दें। उसने यह भी कहा था कि अपनी जायदाद का १।७ हिस्सा सड़कों और पुलों की मरम्मत के लिये अलग रक्खें।

जब [Abu Muslim] नैशापुर आया तो ज़रतुश्ती पुजारियों ने Bihafrid की बुराइयाँ की और उसको इतना भड़काया कि अबू मुसलिम ने इसे पकड़ बुलवाया और इसके जो साथी मिले, इनके साथ उसको क़त्ल करा दिया मगर इसमें से कुछ बच गये और उन्होंने कहा कि उनका पैग़म्बर सियाह क़मेत घोड़े पर सवार होकर जन्नत को चला गया और एक दिन वह अपने दुश्मनों से बदला लेने इसी तरह आयगा।

ईरान में दूसरे बाहरी मज़हब

सासानी दौर में ईसाइयत और बौद्ध धर्म भी फैल गया। तभी यह मज़हब तरक्क़ी पर रहे जबकि ईरान के बादशाहों ने इनकी तरफ़दारी की, नहीं तो यह मज़हब गिर गये। ज़रतुश्ती पुजारियों ने उनको बढ़ता देख हमेशा मुख़ालफ़त की। शापुर दोयम ने ईसाई मज़हब को बढ़ने से रोका जिस से ईसाई पादरियों को तकलीफ़ पहुँची मगर यज़्दगिंद अव्वल ने इनको अपना दुश्मन नहीं समझा। बड़े बड़े अमीर ईसाई हो जाते थे और इसकी आम इजाज़त थी। लेकिन आम तौर से यह मज़हब ज़्यादा नहीं चला और इस मज़हब और इसके माननेवालों को नुक़सान ज्यादा हुआ। बुद्ध मज़हब ईरान के पूर्वी हिस्सों में फैला हुआ था और Afghanistan में भी इसका ज्यादा असर पाया जाता था जैसा कि बहुत से स्तोप [Stupas] मिलने से पता चलता है, बल्ख में नौ बहार का जो मशहूर अतिशकदा

Digitization by American Academy of Parsi Studies. AAIS(USA)

(Fire Temple) था और जिसको ईरानी ज़बान में Navavihar यानी नई खानख़्वाह (New Monestry) कहना चाहिए। यहाँ के पुजारी बरमक कहलाते थे। यह लफ़्ज़ दरअसल Pramaka है जिसके मानी हैं Buddha Monestry का सबसे बड़ा पुजारी। चीनी यात्रियों ने भी यहाँ पर उस मज़हब का केन्द्र (Centre) होना बताया है चीन के पच्छिमी हिस्से से जानी वाली उस सड़क पर जो हिन्दुकुश होते हुए हिन्दुस्तान गई है यह केन्द्र आम तौर से पाये जाते थे।

सासानियों के ज़माने में साल के त्योहार और दावतें

February के महीने की पहली तारीख़ जिससे ईरानियों का साल शुरू होता है नौरोज़ कहलाती है। यह एक बड़ा त्योहार है। Sogdians इसे Nau Sard कहते हैं जो इनका नया साल है। यह आम रिवाज़ था कि इस दिन मिठाई भेंट देते थे। आज भी ऐसा होता है। पहले यह त्योहार तुर्कों ने शक्रबहराम Sheker-bairami के नाम से २१ जून को शुरू किया था। मगर हर साल दिनों का फ़र्क़ पड़ता गया और यह मौसमे बहार की तरफ़ बढ़ता चला गया। यहाँ तक कि Jalalud-Din Malik-Shah के ज़माने में इसको फिर से तै किया गया और इसके लिये २१ मार्च की तारीख़ मुक़र्रर की और आज भी इस तारीख़ को होता है। इस महीने की ६ तारीख़ को जो कि Amshaspand-Haurvatat (Khorbadh) के नाम से है बड़ा नौरोज़ हुआ। इसको उम्मीद का दिन कहते हैं। क्योंकि यह यक़ीन किया जाता है कि इस दिन क़िस्मत Luck हर एक को जितना भी ख़ुशी का हिस्सा देना होता है बांटती है। लोग एक दूसरे पर रंग फेंकते हैं क्योंकि कहा जाता है कि यह पानी के फरिश्ते का दिन है। दूसरा कहना यह है कि इस दिन Jamshid

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ने नहरें ख़ुदवायी थीं और पानी की कमी को दूर किया था। तीसरा कहना यह है कि इस बादशाह ने इस दिन पानी की पाकी हासिल करने का हुक्म दिया था यानी पानी से जिस्म पाक करो। कहा जाता कि बादशाह Hormazd ने भी जो Sapos का लड़का था इन दोनों त्योहारों को मिला दिया था। और बीच के दिनों को भी त्योहार का दिन बना दिया और हुक्म दिया कि ऊँची जगह पर खूब आग जलाई जाए जो अच्छा शुगुन है जिसके मानी यह भी हो सकते हैं कि हवा को भी साफ़ किया जाए। Mihr के महीने की १६ तारीख़ को mihragan का त्योहार होता था जोकि Mithra का त्योहार था। एक मेला होता था जिसमें बादशाह एक ताज पहनकर आता था जिसमें सूरज (mihr) का निशान बना होता था और एक चक्कर बना होता था जिसमें वह घूमता था। कहा जाता है कि यह दिन फरीदूं की ज़ेहाक़ पर फ़तह की यादगार में मनाया जाता था। फरीदूँ की मदद के लिये फरिश्ते आते थे। इस लिये दरबार में खड़े होकर आवाज़ लगाई जाती थी। "फ़रिश्तो इस दुनिया में आओ और बुरी ताक़तों को दूर कर दो।" यह जाड़ों के शुरू में होता था। Adhar के महीने का पहला दिन बहार के शुरू में पड़ता था और इस दिन गरमा Bahar Cheshn का त्योहार होता था जिसमें Kausaj की रस्म होती थी। एक आदमी ख़च्चर पर चढ़ कर पंखा हिलाता हुआ निकलता था। इसके मानी यह समझे जाते थे कि जाड़ा ख़त्म होकर गर्मी आ गई है। कई दिन तक लोग Nuts (सूखे मेवे), Garlic, Fat meat और ऐसी ही गर्म चीज़ें खाते थे और खूब पानी पीते थे ताकि ठंड दूर हो जाए। जब वह आदमी निकलता था तो उसे जाड़े का दुश्मन समझा जाता था और इस पर इसका कोई असर नहीं होता था और वह "गरमा गरमा" चिल्लाता था। Bahman महीने की दसवीं तारीख़

Digitization by American Academy of Iranian Studies. AAIS(USA)

को Sadhaq (Modern Persian, Sabha) का त्योहार होता था जबकि मकानों में से बदक़िस्मती को निकालने के लिये धूनी दी थी बादशाहों की तरफ़ से आग जलाई जाती थी और इस पर से जंगली जानवरों को चलाया जाता था और बादशाह पास बैठकर शराब पीते और ख़ुश होते। यह रिवाज़ इन आगो के रौशन करने से पैदा हुआ। ज़िन्हें लोगों ने घरों की छत पर ज़ोहाक से निजात पाने और फरीदूं की जीत मनाने के लिये जलाया था।

इसी महीने की ३० तारीख़ को (Isfahan) के लोग Afrejagan का त्योहार जानते थे जिसमें एक दूसरे पर पानी डालते थे। फ़ारसी में इसको (Abriz) कहते हैं। दूसरे शहरों में यह त्योहार सालकी पहली बारिश के दिन मनाया जाता था मगर Isfahan में हमेशा ३० Bahman को। इसकी इबतिदा ख़ुसरो नौशेखाँ के दादा फ़ीरोज के ज़माने में हुई थी। एक बार उसके राज्य में बारिश नहीं हुई और ईरान से सख़्त क़हेत (Drought) पड़ा बादशाह ने कई साल के (Taxes) माफ़कर दिये। अतिश कदों का सामान बेचकर रुपया वापस किया और फ़ार्स के बड़े मन्दिर (Adhar-Khurd) में जाकर देवता से इस मुसीबत को दूर करने की दुआ मांगी। उसकी दुआ सुन ली गई और मुश्किल से वह मन्दिर से निकल कर खुले मैदान में आया होगा कि ज़ोर से बादल आये और और खूब बारिश हुई। शुकरीये में फ़ीरोज ने उस जगह के पास एक गाँव आबाद किया और उसका नाम Kamfiruz रक्खा यानी फ़ीरोज की ख़्वाहिश जो पूरी हो गई। लोगों ने एक दूसरे पर खुशी में पानी फेंका और ख़ुशी का इज़हार जो लोगों ने दिल से किया Afrejagan का त्योहार बन गया।

(Isfandarmadh) महीने की पांचवी तरीख़ को जिस का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नाम भी Isfandarmadh पड़ गया एक त्योहार मनाया जाता था जिसे Muzhjiran कहते थे जिसके मानी हैं अच्छी ख़बर पाने का दिन। यह त्योहार Isfahan और Ray के अलावा Fahla मुल्क के और हिस्सों में भी मनाया जाता था। Fahla अरबी का लफ़्ज है जो Pahlav (Parthava) लफ़्ज़ का एक रूप है। इसी लफ़्ज़ से Parthia और Pahlavi के लफ़्ज़ निकले हैं। यह औरतों का त्योहार होता था जिस में मर्द उनको तोहफ़े भेंट देते थे। इसी दिन बिच्छू काटे के तावीज़ भी लिखे जाते थे जिनको मकान की तीन दीवारों में रक्ख देते थे और पीछे की दीवार को ख़ाली छोड़ देते थे।

आजकल का मज़दी या ज़रतुश्ती मज़हब

"The Mazdean Religion at the present Day"

आज ज़्यादातर लोग मुस्लमान हैं। कुछ हिस्सों में ईसाई भी हैं। आरमीनिया और उर्मिया की झील के पास बहुत थोड़े से यहूदी हैं। Yazd और Kirman में मज़दी लोग हैं और बड़े शहरों के कुछ मोहल्लों में जैसे Tihran, Isfahan और Shiraz में भी मज़दी पाये जाते हैं। इनकी कुल तादाद ८ या ९ हज़ार के लगभग है इनको Gabr कहते हैं जो कि लफ़्ज़ काफ़िर की एक बिगड़ी हुई सूरत है जिसके मानी मज़हब से इनकार करनेवाले के हैं। मगर वह इस नाम से चिढ़ते हैं और अपने को Bihdin कहलाना पसन्द करते है जिसके मानी हैं अच्छे मज़हब वाला।

ईरान के इनक़िलाब के बाद इस जमाअत का नाम ज़रतुश्ती पड़ गया आठवीं सदी में बहुत से ज़रतुश्ती हिंदुस्तान आये उनको पारसी कहते हैं जो परसा से हैं। इनके पास अविस्ता किताब ज़न्द जबान में लिखी हुई है और इसकी शरह पहलवी जबान में है। यह लोग

Digitization by American Academy of India Studies. AAIS(USA)

काठियावाड़ के किनारे आबाद हुए। फिर १९ वर्ष वहाँ रहने के बाद गुजरात आगए जहाँ वह सांजन में ७१६ ई० में पहुँचे। अब इनकी आबादी Surat, Nausari, और Bombay में है और यहाँ बम्बई में इनकी तिजारत बहुत फैली हुई हैं। जैसा कि ऊपर ज़िक्र आ चुका है।

रस्म-ओ-रिवाज

इनका नाम आतिश परस्त या आग को पूजने वाला पड़ गया। क्योंकि इस मज़हब में आग की बड़ाई बहुत है। क्योंकि आग Ahuramazda का निशान है। इनके यहाँ Nature worship है। दारा की तस्वीर जहाँ बनाई गई है वहाँ आग भी जलती दिखाई गई है और ऊपर Ahura Mazda या देवता की शक्ल है। Baresma की लकड़ी आग जलाने के काम में लाते हैं और पुजारी के मुंह पर हमेशा एक कपड़ा बँधा होता है जिसे Paitidana या Pauom कहते थे। यह इसलिये होता था ताकि इसके मुंह की साँस आग को गन्दा न करे।

Haoma की पत्ती से एक पवित्र शरबत तैयार किया जाता है। इसको पूजा में ख़ास तौर से रखते हैं। इसके अलावा पाक पानी (Zaothra,) दूध और मक्खन को आग पर चढ़ाते हैं। लोगों को तोहफ़े (Myazda) देते हैं और चढ़ावे की रोटी (Draonah) को पेश करते हैं। ख़ास ख़ून की भेंट मज़दी मज़हब में कहीं नहीं थी इस मज़हब में सफ़ाई का बहुत ख़्याल रक्खा जाता है। कोई भी बर्तन या कपड़ा ज़रा भी ख़राब हो जाये तो उसे अलग रख दिया जाता है। और ख़ूब पाक और साफ़ किया जाता है। इसे मिट्टी से धोकर साफ़ करते हैं या ज़मीन में रगड़ कर। शिया मुसलमानों पर भी इस चीज़ का

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बहुत ज़्यादा असर पड़ा है। अगर दूसरे मज़हब का आदमी किसी चीज़ को छू लेता है तो इसे फेंक देते हैं। इसी वजह से शिया गांवों में अगर कोई ग़ैर मज़हब का आदमी जाये तो उसे कुछ नहीं मिलता था क्योंकि उसका इस्तेमाल किया हुआ बर्तन वह लोग तोड़ देते थे या फेंक देते थे। मुसलमानों के शिया मज़हब की तरक्क़ी ईरान में ख़ास तौर से हुई और जितने भी शिया दूसरे मुल्कों में फैले उनमें से ज़्यादा-तर ईरान के रहने वाले थे, जो अपने साथ वहाँ के रस्म रिवाज भी लाये।

Tower of silence एक ख़ास क़िस्म की इमारत होती है। यह एक गोल घेरा होता है, जिस की दीवार बहुत ऊँची होती है। यह बहुत से हिस्सों में बँटी हुई है जिसमें मुर्दे रखे जाते हैं। इन पर गिद्ध फ़ौरन झपट पड़ते है और उन्हें खा जाते हैं और उनकी हड्डियाँ नीचे गिर पड़ती हैं, जो नीचे एक ग़ार में जमाकर दी जाती हैं। इसको ज़रतुश्ती क़बरिस्तान कहा जाता है और इसको शहरों से दूर पहाड़ियों पर बनाते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परिशिष्ट (APPENDICES)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परिशिष्ट (Appendix) १

ईरान की भूमि और निवासी

ईरान एक ऐसा प्राचीन काल का सभ्य देश है, जिसके बारे में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हो चुकी है। वहाँ के एक प्रसिद्ध राजा दारा ने बहुत अच्छे शब्दों में ईरान की बड़ाई और सभ्यता का वर्णन किया है। उसका कहना है कि तमाम दुनिया की सभ्यता में ईरान ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया। वहाँ की सभ्यता बहुत सुन्दर थी। वैसे ही अच्छे वहाँ के लोग भी थे, जिनके पास बड़े सुन्दर घोड़े हुआ करते थे।

प्राकृतिक स्वभाव से भी ईरान में बहुत सी ऐसी बातें पायी जाती हैं जो हर जगह नहीं मिलतीं। वहाँ नशेबी साहिली ज़मीन(Lowest Coastal Areas) के साथ साथ तेरह हज़ार फ़ीट ऊँची चोटियाँ तक पायी जाती हैं पहाड़ों का सिलसिला नौ दस हज़ार फ़ीट लम्बा और समुद्र की सतह (Sea Level) से १५०० से १७०० फ़ीट की ऊँचाई तक फैला पाया जाता है जगह जगह बीच बीच में उपजाऊ घाटियाँ हैं जो मनुष्य और मवेशी दोनों के लिए लाभदायक हैं। यहाँ दारा के कहने के अनुसार मज़बूत नस्ल की कौमें और ऊँची जाति के घोड़े हर तरफ़ पाये जाते थे।

ईरान में दरिया ज़्यादा नहीं हैं और जो हैं भी उनमें से बहुत से रेगिस्तान में गुम हो जाते हैं। कुछ दरिया जुर्जान सागर या उर्मिया झील में मिल जाते हैं। वहाँ पानी के ज़रिये या नदी के ज़रिये आने-जाने की आसानी कम है। नील या फ़ुरात जैसे बड़े दरिया वहाँ नहीं हैं। इसलिए देश को फ़ायदा भी ज़्यादा नहीं होता। एक बड़ी ख़राबी यह भी है कि वहाँ कुदरती बन्दरगाह (Natural Harbours) भी अच्छे नहीं है। इसी वजह से ईरान की तारीख़ मिश्र या बाबुल से भिन्न है।

Digitization by American Academy of Islamic Studies. AAIS(USA)

यूनानी या फ़ुनीशियन्स (Phoenicians) से इन लोगों ने जहाज़ चलाने का हुनर सीखा। मगर इनको वह सफलता प्राप्त नहीं हुई जो दूसरी जहाज़ चलाने वाली क़ौमों को मिली। एक बात और हुई, ईरान के बादशाहों ने बड़े बड़े शहर नहीं बसाये। पसरगदई (Persepolis = Istakh) की भारी और भद्दी इमारतों में ही रहकर अपने दिन व्यतीत करते रहे। इसलिए इन शहरों का मुक़ाबिला बाबुल (Baylon) निनेवह (Ninevch) मेमफिस (Memphis) और थीब्स Thebes से नहीं किया जा सकता।

ईरान के बादशाहों ने इतनी बड़ी सल्तनत बनाई कि सिर्फ़ बाद में रोमन साम्राज्य ही उससे बढ़ सका। ईरान के पुराने रहने वाले मीड्स थे और फ़ार्स के रहने वाले जो बाद में परशियन कहलाये यह दोनों आपस में मिल जुलकर एक हो गये। उनकी ज़बान रहन-सहन और सभ्यता एक बड़ी सल्तनत के द्वारा मिलजुलकर आर्यन कहलाने लगी। कभी कभी इनको Indo-European भी कहते हैं मगर ये अपने को आर्यन कहलाना ज़्यादा पसन्द करते हैं और यही नाम इनके लिए सबसे अच्छा भी है। आर्यों का वतन क्या था—इसका पता चलाना कठिन काम है। बाज़ लोगों का कहना है कि इन्होंने उस इलाके में जन्म लिया होगा जिसके पूर्व Carpathians दक्षिण में Balkans पच्छिम में Austrians Alps और Bohmer Wald थे और उत्तर में Erzgebirge थे। यह ऐसा इलाक़ा था जहाँ कि जरख़ेजी (Fertility), उम्दा नस्ल के घोड़ों की बहुतायत और दूध देने वाले जानवरों के लिए चरागाह की कसरत काफ़ी शुहरत रखती है। इसे इनका पुराना वतन कहा जाता है और यहाँ पहले मीड्स और उनके बाद परशियन आये और जब ये लोग नए देश में बसे, जिसे अब ईरान कहते हैं तो वहाँ के पुराने रहने वाले हिन्दुस्तान की तरफ़ चले आये

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह सब कब हुआ इसका सही पता नहीं मगर Hittite कतबों (Inscriptions) में १३०० वी० सी० के लगभग इनका नाम मंडा दिया हुआ है। कहा जाता है कि बाबुल वाले इन लोगों से और भी पहले से वाकिफ़ थे, यानी २५०० बी० सी० में वह इन्हें जानते थे और उनके यहाँ इनका नाम अमीदाई या मदाई था।

शुरू के मीड्स या परशियन्स के बारे में जानना कि वह आर्यन थे और उसी तरह की ज़बान भी बोलते थे इसका पता चलाना कठिन है और फिर यह मालूम करना और भी मुश्किल है कि इन दोनों में आपस में सम्बन्ध कब स्थापित हुआ—मगर हम देखते हैं कि सरूस के जमाने में ये दूसरी कौमों पर छा गये। असीरिया वालों के यहाँ नवीं सदी में उर्मिया झील के दक्षिण में एक ज़िले का नाम परशुवा (Parshuwa) था मगर इसका कोई सुबूत नहीं कि इस नाम का कोई सम्बन्ध परशियन से भी हो सकता है। इन लोगों ने सैकड़ों वर्ष तक सिवाय ज़मीन जोतने और मवेशी चराने के कोई दूसरा काम नहीं किया। मीड्स की तरह असीरिया वालों ने इनको भी दबाया, मगर इनमें कोई ऐसा सरदार पैदा नहीं हुआ जो इनको उभारता और तरक्की देता।

—:❀:—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परिशिष्ट (Appendix) २

ईरानियों की ज़बान

हुख़मंशी ख़ानदान के बादशाह जो ज़बान बोलते थे वह बड़ी ईरानी भाषा के परिवार की पच्छिमी भाग वाली भाषा थी और यह भाषा आर्या परिवार की एक शाखा थी आर्या परिवार में जो-जो भाषायें बोली जाती थीं उनमें निम्नलिलित मशहूर हैं:—

(१) हिन्दुस्तानी (Indian)—जिसमें संस्कृत सबसे ज़्यादा मशहूर है।

(२) ईरानी—जिसमें नई और पुरानी फ़ारसी सबसे ज़्यादा मशहूर हैं। इस परिवार में और बहुत सी भाषायें थीं जिनमें से नीचे दी हुई कुछ ऐसी हैं जिनका आपस में सम्बन्ध रहा है।

(i) Armenian; (ii) Greek; (iii) Albanian; (iv) Italic; (v) Caltic; (vi) Germanic.

उस ज़माने का साहित्य ज्यादा नहीं मिलता बल्कि उससे कहीं ज़्यादा बाबुल का, असुरिया का और कलदानी (Chaldean) साहित्य मिलता है। हुख़मंशी बादशाहों ने अपने शिलालेख और दूसरे कतबे (Inscriptions), जो सबके सब अब समझ में आ गये हैं तीन ज़बानों में लिखवाये यानी फ़ारसी में एलम ज़बान में ये लिखावट खड़ी लकीरों और नुक़तों (Cuneiformor Wedge Shaped Characters या और अच्छा हो अगर कहें कि Nails & dots form) में थी इसके मुक़ाबिले में बाबुल वालों की लिखावट बहुत ज़्यादा घुमाव और फिराव की (पेचीदा=पेचदार) थी जिसमें सैकड़ों अक्षर आवाज़ ज़ाहिर करने के निशानत (Phonetics) और तस्वीरें और शक्लें (Ido-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

graphs) पाये जाते थे। इसके मुक़ाबिले में एलम की ज़बान (Elamite) ज्यादा आसान थी और इसमें अब तक ७३० अक्षरों का पता चला है मगर इन दोनों के मुक़ाबिले में फ़ारसी और भी ज्यादा आसान है जिसमें सिर्फ़ ४७ अक्षर पाये जाते हैं। हो सकता है कि ये तीसरी भाषा यानी फ़ारसी पहली दो भाषाओं की आसान सूरत हो मगर एक कठिनाई भी इस बात को मानने में मालूम पड़ती है वह यह कि कहीं भी निशानात और उनके मानी एक दूसरे से मिलते जुलते हुए नहीं हैं। पुरानी फ़ारसी भाषा में ३६ अक्षर पाये जाते हैं। पुरानी फ़ारसी में तीन निशान बिल्कुल वही हैं जो एलम वालों के यहाँ हैं मगर इनके मानों में फ़र्क़ है। सबसे मुख्य बात ये है कि फ़ारसी, एलमी, और असीरिया और बाबुली ज़बानों में जितनी भी निशान हैं (Sign) उन सबमें एक बुनियादी निशान (Fundamental sign) मुख़्तलिफ़ सूरतों (Combinations) में एक ही है। यह बात कुछ समझ में आने वाली नहीं है कि तीन मुख़्तलिफ़ मुल्कों में रहनेवाले लोगों ने किस तरह अलग-अलग रहते हुए एक ही तरह के निशानों को अपनाया और तरक्क़ी दी। यह बात इससे ज़रूर साबित हो जाती है कि इनकी बुनिनाद आसुरी (Assyrian) बाबुली है। शुरू में लिखावट तस्वीरें बनाकर थीं जिनमें लकीरें और मुड़े हुए निशान (Curves) थे। जब इन Curves को मुलायम मिट्टी में खोदा गया तो इन्होंने Wedge यानी कील की शक्ल जैसी पत्थर की सूरत इख्तयार कर ली। फ़ारसी और एलमी ज़बानों में ऐसी कोई बात शुरू में नहीं थी मगर मुमकिन है कि बाबुली निशान एलमी और फिर फ़ारसी जबान में आकर और भी ज्यादा आसान हो गई हों।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परिशिष्ट (Appendix) ३

ईरान का मज़हब

ईरानियों का वह मज़हब जिसे 'मीड्स' और 'पर्शियन्स' अपने वतन से साथ लाये थे उसका सही पता चलना आसान नहीं है। कुछ रस्में और मतभेद की बातें अब भी कहीं कहीं मिलती हैं जिनसे यह अन्दाज़ा होता है कि वे लोग कई ख़ुदाओं को पूजते थे यानी Polytheists थे। चौदहवीं सदी ई० पू० में उनके वहाँ Mitra, Varuna, Indra और Nasatya की पूजा होती थी। ये चारों नाम हिन्दुस्तान के धार्मिक इतिहास में भी हमको मिलते हैं। ईरानियों के यहाँ इन चार के अलावा बहुत से मुक़ामी (Local) देवी-देवता माने जाते थे, जिनमें कुछ लड़ाई के देवता थे, कुछ खेती-बाड़ी के थे और कुछ तूफ़ान और दूसरी ऐसी ही प्राकृतिक बातों से सम्बन्ध रखते थे। इनके यहाँ बेजान चीज़ों या ख़यालात (Animistic Ideas) की पूजा भी पाई जाती थी और प्राकृतिक तत्वों (Natural Elements = कुदरती अनासिरों) में सबसे अधिक महत्व (Importansce) और स्थान आग को हासिल था। आग या ऐसी ही दूसरी ताक़तों को इन्सानी शक्ल (Personification), दी जाती थी उनकी पूजा की जाती थी और उनसे दुआ माँगी जाती थी। कभी-कभी उनसे मन्नत और मुराद माँगने का भी सिलसिला होता था। ये सब बातें चलती रही होंगी, यहाँ तक कि आम लोगों का अक़ीदा (मत) बहुत सी बातों से मिलकर कुछ का कुछ हो गया। बहुत सी वहम परस्ती की बातें (Superstitions) आ गईं और अच्छे और बुरे ख़यालात की देवियाँ और ताक़तें अनगिनित रूप में मानी और मनाई जाने लगीं। कभी कभी लोगों के ऊपर मज़हबी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जोश और जज़्बे का भी असर होता था और इस चीज़ को उभारने के लिये Soma या Hoama को इस्तेमाल करते थे। यह एक तरह की पवित्र बूटी थी जो घोट कर पी जाती थी।

हिन्दुस्तान और ईरान के बीच बहुत से मतभेद और मज़हब की बातें ऐसी हैं जिनसे पता चलता है कि एक का दूसरे पर बहुत प्रभाव पड़ा है। Asura और Ahura के बीच ज़्यादा फ़र्क़ नहीं है लेकिन ईरान का Daeva या देव बुरी ताक़त का नाम था जो सूरत बदलकर हिन्दुस्तान में देवता या Deva बन गया और उसके मानी अच्छी ताक़त के हो गये और आगे चलकर एक और लफ़्ज Asura Deva बना जिसमें शान और बड़ाई के साथ-साथ भय और हानि के विचार भी शामिल थे। इस तरह की बातें 'मीड्स' और 'पर्शियन्स' के यहाँ भी थीं मगर उनको समझाने और आम लोगों के लिये आसान बनाने की ज़रूरत थी। उनके यहाँ बहुत सी बातें साफ़ नहीं थीं। जगह-जगह उलझनें थीं और इस बात का लोग इन्तज़ार कर रहे थे कि कोई बड़ी हस्ती आये और उनकी मुश्किल को हल करे।

आख़िर पैग़म्बर ज़रातुश्त्र, (Zarathushtra), जिनको यूनान वालों ने Zoroaster कहा है, आये। इनके नाम में जो Ushtra शब्द है इसके माने ऊँट के हैं। उनके यहाँ इसी तरह के नाम होते थे जैसे उनके बाप का नाम Pourushaspa था, जिसके मानी हैं वह जिसके पास भूरे रङ्ग के घोड़े हों। इसी तरह उनकी माँ का नाम Dughdhova था, जिसके मानी हैं वह जो गायें दुहती हो। इसी तरह उनकी बीवी का नाम Hvovi था जिसके मानी हैं वह जिसके पास उम्दा क़िस्म के बैल हों। इन सब नामों से पता चलता है कि उनके ज़माने में चरवाहों और किसानों जैसी ज़िन्दगी पाई जाती थी। वह

Digitization by American Academy of Indian Studies. AAIS(USA)

कोई बड़े अमीर ख़ानदान में पैदा नहीं हुए थे और उनकी ज़िन्दगी सीधी-सादी थी। उनके बारे में यह कहना कि वे ऐसे ज़माने में थे जो प्रागैतिहासिक (Pre-historic) था सही नहीं है। न कोई ख़्याली क़िस्सा या देव-माला की कहानी उनसे सम्बन्धित है। उनकी पैदाइश की जगह के बारे में कई राय हैं और सही बताना मुश्किल है। बख़्तर (Bactria) में उन्होंने अपने मत को फैलाया और वहाँ के राजा ने उनको मान लिया। वहाँ की रानी भी उनके धर्म की हो गई। मगर इससे एक हानि भी हुई वह यह कि धर्म के अन्दर राज्य का असर फैलने लगा जो अच्छी चीज़ नहीं होती।

वे कब हुए और कब उन्होंने अपना मत फैलाया यह भी ठीक नहीं बताया जा सकता। कहा जाता है कि १००० बी० सी० के लगभग उनकी पैदाइश हुई। दूसरा कहना यह भी है कि वे ६६० और ५८३ बी० सी० के बीच में हुए हैं। एक कहना यह भी है कि जिस राजा ने सबसे पहले उनके मत को माना वह दारा का बाप Hystaspis था।

ईरानियों के इस नये मज़हब ने उनकी ज़िन्दगी के धारे को बिल्कुल बदल दिया। इसके पहले वे बहुत से देवी-देवता मनाते थे, देवों की पूजा करते थे और जानवरों की क़ुरबानी चढ़ाते थे। मगर अब वे एक ख़ुदा को मानने लगे और सबसे बड़ी बात यह हुई कि Zoroaster ने पुजारियों के मज़हब को छोड़कर एक अलग रास्ता इख़्तियार किया। यह बात Zoroaster के घर के वातावरण (Environment माहोल) और चरवाहे जैसी ज़िन्दगी (Pastoral Stage) बिताने के कारण और भी ज़्यादा साफ़ हो जाती है। वहाँ घोड़े, गाय और दूसरे जानवरों के बीच रहते हुए जानवरों की भेंट देना वे कैसे स्वीकार कर सकते थे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Zoroaster ने जिस पाक-रब की पूजा की तरफ़ बुलाया उसको अहुरा-मोज़्दा के नाम सें याद किया जाता है। मूसा के Yahweh की तरह उन्होंने ख़ुदा-ए-बरतर की एक ऐसी बड़ी शान क़ायम की जो बहुत आला थी। अगर देखा जाय तो और मुवाहिद मज़हबों (Monotheistic Religions) की तरह अहुरा-मोज़्दा ख़ुदा-ए-वाहिद का ही नाम है। सिवाय उसकी पूजा के और किसी की पूजा इस मज़हब में नहीं हो सकती। उसकी राजधानी में सिर्फ़ अच्छाई और अच्छे काम करनेवाले पाये जाते हैं। जानवर और पौदे भी पवित्र हैं। इन सबको उसने बहूमानू या अच्छे ख़यालात के द्वारा पैदा किया। इस राज्य (Khshathra) के अन्दर तादाद बढ़ाने की शर्त यह है कि जो भी आये वह इसके क़ानून माने, यहाँ की माँगें पूरी करे और इसकी ज़िन्दगी के नियम बजा लाये। साथ ही साथ यह भी ज़रूरी है कि वह उसके अन्दर अपनी खुशी से आया हो (इस जगह इस्लाम की सही Spirit और इसके मानी यानी खुशी से इस्लाम क़बूल करना कुछ ऐसा पूरा उतरता है कि बग़ैर इस बात को बताये हुए आगे कुछ कहने को दिल नहीं चाहता।) पाकी (Purity) और सच्चाई (Righteousness) इस मज़हब के दो ख़ास गुर हैं और जब इनको बरता जाता है तो अहुरा-माज़्दा (Aurmazd या Ormuzd) की राजधानी बढ़ती है और इनके इनकार से या इनको न बरतने से बुराई पैदा होती है जो झूठ का एक नाम है। अहुरा-माज़्दा ने दुनिया और इन्सान पैदा किये और इस तरह यह सवाल उठता है कि उसने बुराई भी पैदा की होगी। मगर यह बात कुछ जँचती नहीं, क्योंकि अच्छाई की ताक़त बुराई क्यों पैदा करेगी। इसलिये इस सवाल के दो जवाब होते हैं कि या तो दो ताक़तें मानी जायें जिसके मानी यह हुए कि Monotheism

Digitization by American Academy of India Studies. AAIS(USA)

से भटक कर Dualism की तरफ़ आना पड़ा, मगर एक दूसरी सूरत और है कि पाक-रब ने सिर्फ़ अच्छाई पैदा की और अच्छाई के बरते न जाने की सूरत में बुराई पैदा होती है यानी Absence of good is evil. यह वसूल मुसलमानों के एक फिरक़े (Sect) मोतज़िला में फैल गया। उनका कहना था कि खुदा ने कभी कोई बुराई पैदा नहीं की बल्कि बुराई के ख़्याल तक को भी उसकी ओर सूचित (Attribute) करना गुनाह है। बुराई का पैदा करनेवाला खुदा नहीं है बल्कि जब अच्छाई न हो तो बुराई ख़ुद बखुद पैदा हो जाती है।

अब दो बातें और कहना हैं। एक तो यह कि हम Zoroaster को सिर्फ़ पैग़म्बर का काम करते पाते हैं। उन्होंने क़ानून नहीं बनाया। उनका कहना सिर्फ़ इतना ही था कि सचाई से लगे रहो मगर उन्होंने इस सचाई को बताया नहीं कि वह क्या है और उसे किस तरह प्राप्त किया जा सकता है। एक कहना यह भी हो सकता है कि अच्छे विचार (हुमता), अच्छे शब्द (हुख़्ता) और अच्छे कर्म (हुवरश्ता) के द्वारा हम सचाई को पा सकते हैं। ज़मीन को काम के क़ाबिल बनाना, उसे जोतना और उससे अनाज हासिल करना पाक-रब को बहुत पसन्द है। दलदलों को साफ़ करना, रेगिस्तानों और बंजर ज़मीन को खेती योग्य बनाना इस मज़हब में बड़ी तारीफ़ का काम है। सचमुच ईरान जैसे देश में इन बातों की बहुत ज़रूरत थी क्योंकि वहाँ ज़्यादातर ज़मीन बेकार पड़ी है और पैदावार कम होती है। जितना महत्व कृषि को इस मज़हब में है और जगह नहीं मिलता। दूसरी बात यह है कि इस मज़हब में दूसरी दुनिया या आख़िरत का ख़्याल बहुत बड़ा हुआ है जिसके मातहत सबसे पहले तो इसी दुनिया में कर्मों का फल मिल जाता है और इसके बाद मरने पर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भी उसे भोगना पड़ता है। जो इन्सान अच्छाई को चुनता है उसे न सिर्फ़ इस दुनिया में बल्कि इसके बाद वाली दुनिया में भी पुण्य मिलता है। Zoroaster ने जब कृषि की अच्छाई को बताया तो साथ ही साथ जानवरों, ख़ास कर स्वदेशियों की तरफ़ भी ध्यान दिया। एक मौक़े पर उन्होंने अपनी मेहनत और सचाई के बदले में अहोरा माज़दा से दस घोड़ियाँ, एक घोड़ा और एक ऊँट माँगा है जिसके मानी हुए कि इन जानवरों के पाने से उन्हें बड़ी खुशी और सफलता प्राप्त हुई जो इस बात का सुबूत है कि उनको इन जानवरों से कितनी मुहब्बत थी। अच्छाई के बदले की उम्मीद के साथ साथ इस मज़हब में यह ख़्याल भी ज़ाहिर किया गया है कि एक दिन बुराई ख़त्म हो जायगी और पाकी और सचाई का राज होगा। Zoroaster को उम्मीद थी कि वे उस दिन तक ज़िन्दा रहेंगे मगर ऐसा नहीं हुआ।

इस मज़हब में इन्सानों के अन्दर भाईचारा और जानवरों से मुहब्बत के वसूल पर ज़ोर दिया गया है। सबसे पहले इस सिलसिले में गाय का नाम आता है फिर घोड़े, ऊँट और आख़िर में कुत्ते को भी इज़्ज़त की जगह दी गई है। यहाँ तक कि पुराने ज़माने की कब्रों को खोदने पर कुत्ते इन्सानों के साथ दफ़न मिले और चरवाहों की ज़िन्दगी (Pastoral Stage) में ऐसा होना कोई असम्भव नहीं है क्योंकि उनका सम्बन्ध कुत्ते से बहुत गहरा होता है। अगर कुत्ते (Watch-dogs) चरवाहों के गल्ले की निगहबानी न करते तो किसी तरह काम नहीं चल सकता था।

इस मज़हब की ख़ास किताब अवेस्ता है जो ज़्यादा बड़ी नहीं है। 'इलियड' (Iliad) और ओडिसी (Odyssy) दोनों को मिलाकर अगर देखा जाय तो इन दोनों से दूनी मुटाई होगी। इस किताब में Zoroaster के ज़माने की जमा की हुई सब बातें इकट्ठी नहीं हैं

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

क्योंकि इसको जमा करने का काम अर्दशीर अव्वल के ज़माने में हुआ जिसका राज्य २२६ ए० डी० से २४० ए० डी० तक रहा। सासानियों से पहले ईरान में सिकन्दर का हमला हुआ था जिसमें इस्तख़ (Persepolis) तबाह हो गया था और अवेस्ता का भी बहुत कुछ हिस्सा उसी गड़बड़ में गुम हो गया। मौजूदा नुस्ख़ा (Copy) चौथी सदी ईस्वी में तैयार हुआ था। इसके बाद जब सातवीं सदी ईस्वी में मुसलमान ईरान आये तो उनके ज़माने में बहुत गड़बड़ मची जिसकी वजह से पारसियों को अपना मुल्क छोड़कर हिन्दुस्तान जाना पड़ा। कहा जाता है कि उनके पवित्र साहित्य का दो तिहाई भाग ख़त्म हो गया और केवल एक तिहाई भाग हिन्दुस्तान पहुँच सका। हिन्दुस्तान में अगरचे अमन-अमान था मगर पारसी यहाँ आकर अपने मज़हब की कोई ख़ास तरक्क़ी नहीं कर सके।

यह अजीब बात है कि इस मज़हब की ख़िदमत एक फ्रांसीसी के द्वारा हुई जिनका नाम Abraham Hyacinthe Anquetil Du Perron था। ये पेरिस में ७ दिसम्बर १७३१ ई० को पैदा हुए। उनको पहले इब्रानी (Hebrew) और फिर अरबी और दूसरी सामी (Semetic) भाषाओं से दिलचस्पी पैदा हुई। इसके बाद उन्होंने पारसियों के मज़हब की तरफ़ ध्यान दिया। वे हिन्दुस्तान आये और ऐसी ज़बानें पढ़ीं जिनकी मदद से वे अवेस्ता को पढ़ सकें। वे पाण्डिचेरी १० अगस्त १७५५ ई० को पहुँचे, फिर सूरत गये। वहाँ पारसी पादरियों ने उनका जोश देखकर उन्हें अपनी मज़हबी किताबें पढ़ने की इज़ाज़त दी, यहाँ वे ७ वर्ष तक रहे। जब १४ मार्च १७६२ ई० को पेरिस वापस पहुँचे तो उनके पास १८० मैनुस्क्रिप्टस (Manuscripts) थे। १७७१ ई० में उन्होंने ज़ेन्द अवेस्ता को Ouvrage De-Zoroasire के नाम से तीन जिल्दों

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में छपवाया। यह इस किताब का सबसे पहला तरजुमा (अनुवाद) था और इस तरह इस बड़े और बहुत अच्छे मज़हब की किताब दूसरे लोगों के सामने पहली बार आई। अवेस्ता के अन्दर कई हिस्से हैं और उनकी ज़बानें अलग-अलग हैं। ये हिस्से निम्नलिखित रूप में हैं:—

१. यस्ना (Yasna)—इसमें Gathas भी शामिल हैं। ये कुछ दुआयें हैं और कुछ भजन, जो पूजा पाठ के काम में आते हैं।

२. यिस्परेड (Vispered)।

३. यश्त्स (Yashts)

४. नायाशेज़ (Nyaishes), गाहज़ (Gahs) आदि।

५ वेनदीदाद (Vendidad)

६. हधोक्त नस्क (Hadhokt Nask) के कुछ हिस्से।

अवेस्ता का सबसे मुख्य भाग Gathas हैं जो यस्ना में २८-३४; ४३-४६; ४७-५०; ५१, ५३ की सूरत में महफ़ूज़ (सुरक्षित) हैं। इनमें पैग़म्बर ज़रतुश्त की तालीम दी हुई है और सचाई और धर्म की ऐसी बातें बताई गई हैं जिनसे दार-ए-आज़म जैसे महान् पुरुष ने अपने में एक नया जज़्बा पैदा किया। यही वह चीज़ थी जिसका असर इतना ज्यादा पड़ा कि यूनानी जैसी सभ्य क़ौम ने भी इन बातों की तारीफ़ की है।